सितम्बर 2002
Rs. 10/-
चन्दामामा

चिन्टू की पसन्द

चिंटू को ममी एक मामूली साबुन से नहला रही है। वह गुस्से से रो रहा है।

दुकान में चिंटू बाजार में उपलब्ध सभी प्रकार के साबुन देखता है।

द हाउस ऑफ मैसूर सन्दल चन्दन की खुशबू सीधे आपके घरों में ८० से भी अधिक वर्षों से ला रहा है।
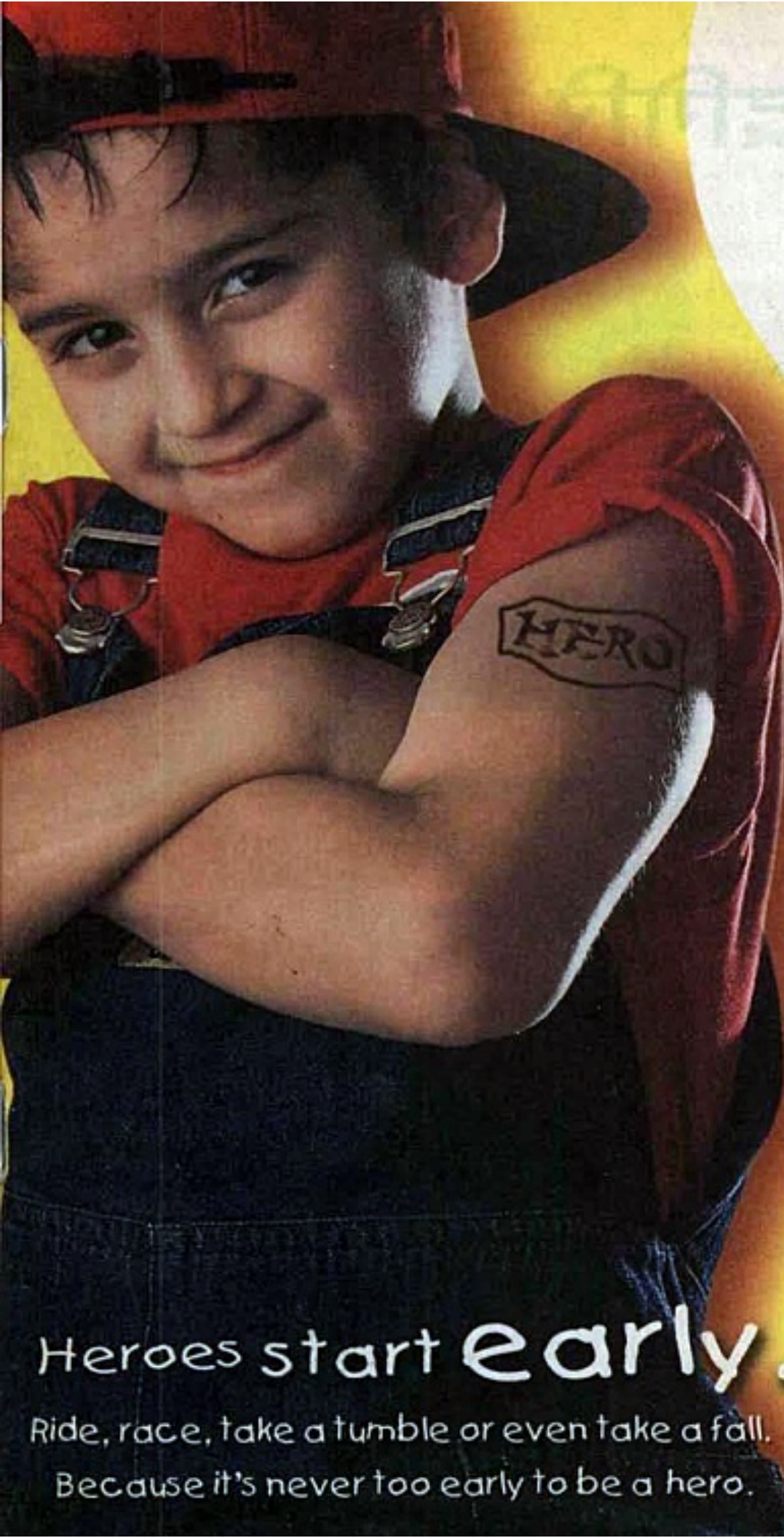
चन्द्रगिरि क़िला

- तिरुपति के निकट

तीन शताब्दियों से भी अधिक समय तक तेलुगु और कन्नड़ भाषी क्षेत्र के एक बड़े भूभाग में फैला हुआ विजय नगर साम्राज्य एक शानदार युग था।

विजय नगर के शासक राया कहलाते थे। लोग बहुवचन के अर्थ में रायल वारु कहकर उनकी प्रशस्ति करते हुए उनके बारे में सम्मान के साथ बात करते थे। कला और संस्कृति के संरक्षक के रूप में उन्होंने ललित कला की सभी शैलियों को प्रोत्साहित किया और तेलुगु साहित्य को समृद्ध बनाया।

तिरुपति से १२ किलोमीटर दूर स्वर्णमुखी नदी के तट पर बसी हुई विजयनगर शासकों की अंतिम राजधानी चन्द्रगिरि में विजय नगर साम्राज्य का उत्थान-पतन एक प्रभावशाली ध्वनि एवं प्रकाश प्रदर्शन द्वारा चित्रित किया जाता है।

अमिताभ बचन की गूंजती आवाज में गाथा - विवरण के साथ चन्द्रगिरि का ध्वनि एवं प्रकाश प्रदर्शन दक्षिण भारत, जिसमें विजयनगर साम्राज्य सबसे अधिक विशाल था, के इतिहास और वीरता की कहानियों में रुचि रखनेवालों के लिए अवश्य देखने योग्य है। आन्ध्र प्रदेश पर्यटन विकास निगम द्वारा निर्मित इस उत्तेजक पर शैक्षणिक प्रदर्शन को बच्चों और उनके परिवारवालों को देखने से कभी नहीं चूकना चाहिए।

आन्ध्र प्रदेश का रायलसीमा क्षेत्र वास्तव में ऐसा उन्हीं के नाम पर पुकारा जाता है - राया की भूमि। इसे प्यार से रत्नालासीमा - रत्नों की भूमि भी कहा जाता है। कृष्णदेवराया विजयनगर के शासकों में सबसे अधिक शक्तिशाली और उदारचेता थे।

विजयनगर साम्राज्य अस्तित्व में तब आया जब मुहम्मद बिन तुगलक का प्रभाव दक्कन पठार पर कमजोर हो गया। विजयनगर साम्राज्य पर तीन वंशों ने राज्य किया जिसमें अंतिम तलुवा वंश था। कृष्णदेवराया ने (१५०९-१५३०) कृष्णा और तुंगभद्रा नदियों के मध्यवर्तीय क्षेत्र पर अधिकार कर लिया और पूर्वी तट तथा उड़ीसा के शासकों की ओर कूच किया।

चन्द्रगिरि क़िला आज खंडहर मात्र रह गया है, लेकिन इसके अंदर के रानी महल और राजा महल को आंध्र प्रदेश पर्यटन द्वारा संवारा-सजाया और प्रकाशित किया गया है। क़िले के अंदर अनेक मंदिर हैं। एक रोचक ऐतिहासिक तथ्य यह है कि विजयनगर के अंतिम राजा ने ब्रिटिश सम्राट के साथ एक संधि पर हस्ताक्षर कर चेना पत्न में जमीन का एक टुकड़ा उन्हें भेंट कर दिया था, जो बाद में मद्रास और तदनन्तर चेन्नई कहलाया। इस भूमि का प्रयोग अंग्रेजों ने सेंट जॉर्ज क़िला बनवाने में किया, जिससे न केवल भारतीय समुद्र तट पर उनका प्रभाव स्थापित हो गया बल्कि ईस्ट इंडिया कम्पनी के माध्यम से भारत में ब्रिटिश शासन का मार्ग भी प्रशस्त हो गया।

विजयनगर पर्व

(अक्तूबर का तीसरा शुक्रवार, शनिवार और रविवार)

तिरुपति के निकट ऐतिहासिक चन्द्रगिरि क़िला (जहाँ ध्वनि एवं प्रकाश प्रदर्शन नित्यप्रति आयोजित किया जाता है) विजय नगर साम्राज्य के शासकों की भव्यता का प्रमाण है। यह पर्व और तिरुमलै मंदिर में आयोजित होनेवाला वार्षिक ब्रह्मोत्सव-दोनों एक साथ पड़ते हैं। सर्वाधिक विख्यात संगीतज्ञों और नर्तकों का प्रदर्शन देखनेवाले पर्यटकों को लगता है मानों वे अतीत की यात्रा पर हों।

केन्द्रीय आरक्षण कार्यालय : तिरुपति :- टी.पी. एरिया, वेंकटेश्वर बस स्टेशन के पीछे, फोन : ०८५७४-५५३८५, ५५३८६ मोबाइल : ९८४८०-७३०३३, फैक्स : ०८५७४-५६८७७ ; तिरुमला : ०८५७४-३००५५; नेल्लूर :- २४, ऐ/१६१३, पहली मंजिल, कस्तुर्बा कलाक्षेत्रम के सामने, पुलिस आफिस रोड, दर्गा मिट्टा, फोन : ०८६१-३०६०८९; हैदराबाद : बी.आर.के.आर. भवन के सामने, टैंक बंड रोड, फोन : ०४०-३४५३०३६, ३४५०१६५, फैक्स : ०४०-३४५३०८६ ; सिकन्दराबाद :- यात्री निवास कॉम्प्लेक्स, एस.पी. रोड, फोन : ०४०-७८९,३१००, ७८१६३७५; विजयवाड़ा :- होटल इलापुरम कॉम्प्लेक्स, गाँधी नगर, फोन: ०८६६-५७०२५५, ५२३९६६; विशाखपट्टनम :- एल.आई.सी. बिल्डिंग, दाबा गार्डेन, फोन : ०८९१-७४६४४६; फैक्स : ७१३१३५; करनूल :- ए.पी.टी.डी.सी. डिविजनल आफिस, सी/डी-६, सी-कैम्प, नन्द्याल रोड, टेलीफिक्स : ०८५१८-७०१०४; नागार्जुनसागर :- ०८६८०-७७३६४, ७६५४०; श्रीशैलम: ०८५२४-८८३११; वारान्गल :- ०८७१२-४५९२०१, ४४६६०६

चौबीस घण्टे आन्ध्र प्रदेश संबंधी सूचना के लिए हैदराबाद/सिकन्दराबाद से १९०१-३३४०३३, भारत में अन्य स्थानों से ०९०१-३३४०३३ पर फ़ोन करें।

विशेष आकर्षण

सम्पुट - १०६ सितम्बर - २००२ सञ्चिका - ९

सत्यान्वेषक

१९

भगवान के साथ द्यूतक्रीड़ा

२४

मांया सरोवर

११

घर का चोर

५५

अन्तरङ्गम्

SUBSCRIPTION

For USA and Canada
Single copy $2
Annual subscription $20
Remittances in favour of Chandmama India Ltd.
to
Subscription Division
CHANDAMAMA INDIA LIMITED
No. 82, Defence Officers Colony
Ekkatuthangal, Chennai - 600 097
E-mail : subscription@chandamama.org

शुल्क

सभी देशों में एयर मेल द्वारा
बारह अंक ९०० रुपये
भारत में बुक पोस्ट द्वारा १२० रुपये
अपनी रकम डिमांड ड्राफ्ट या
मनी-ऑर्डर द्वारा
'चंदामामा इंडिया लिमिटेड'
के नाम भेजें।

संस्थापक
बी. नागिरेड्डी और चक्रपाणि

हिंसा के लिए कोई स्थान नहीं

हाल में पदमुक्त राष्ट्रपति श्री के.आर. नारायणन ने धार्मिक सहिष्णुता को सुरक्षित रखने के लिए देश को प्रबोधित किया। एक दिन बाद हमारे नये राष्ट्रपति डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम ने पुनरुत्थानशील भारत की अपनी कल्पना को हमारे सामने रखा, जो अन्य तत्वों के साथ-साथ धर्म निरपेक्षता के प्रति वचनबद्धता के द्वारा संभव है।

दोनों के मन के पृष्ठ भाग में निश्चित रूप से देश के कुछ भागों में हाल में देखी गयी धार्मिक असहिष्णुता ही रही होगी। यह तो सभी जानते हैं कि कोई भी धर्म हिंसा का उपदेश नहीं देता। केवल सत्ता के व्यापारी अथवा धर्मोन्मादी ही अपने स्वार्थ साधन के लिए निर्दोष लोगों पर आतंक ढाहते हैं। देश काँप गया जब एक धर्म के अनुयायियों ने एक लेबर कॉलोनी के ३० अन्य मतावलम्बी निवासियों को कत्ल कर दिया।

यह कैसा विचित्र संयोग है कि उसी दिन उसी मत के प्रतिनिधियों ने दूर देश इंग्लैंड में क्रिकेट खेलते समय अपनी मातृभूमि की जीत के लिए स्मारक-प्रयास किया। हमारी टीम लॉर्ड्स के मैदान में विध्वंस के कगार पर थी जब मुहम्मद कैफ और जहीर खान के सम्मिलित प्रयास ने उनकी टीम को घूरती हुई शर्मनाक घडी को टाल दिया और देश को जीत का एक स्मरणीय जामा पहना दिया। विजय के उस क्षण में उन दोनों खिलाडियों ने यह कभी नहीं सोचा होगा कि वे किस धर्म को मानते हैं।

इसी प्रसंग में हमें दोनों राष्ट्रपतियों के विचार-साम्य को देखना है।

भारत एक ऐसे चरण पर पहुँच चुका है जहाँ हिंसा के लिए कोई स्थान नहीं है। प्रत्येक व्यक्ति को केवल शान्ति और दूसरों के कल्याण के बारे में सोचना चाहिए।

सम्पादक : *विश्वम*

Visit us at : http://www.chandamama.org

AKA LAKA
OM BOOM

7827. Available on select cellular networks.

TAR WORLD • CHANNEL [V] • ESPN • NATIONAL GEOGRAPHIC CHANNEL • VIJAY • INDYA.COM • RADIO CITY

भारत में अल्पज्ञात स्थान

टायडा में जंगल बेल्स

टायडा आन्ध्र प्रदेश के पूर्वी घाट में विशाखापत्तनम से ७५ कि.मी. दूर एक छोटा सा गाँव है। आन्ध्र प्रदेश पर्यटन विकास निगम और राज्य वन विभाग ने मिलकर यहाँ जंगल बेल्स नाम से एक प्रकृति-शिविर विकसित करने का निश्चय किया है। यह राज्य में अपनी किस्म का पहला 'इको-पर्यटन व पर्यावरण-शिक्षा' संबंधी साहसिक कार्य है।

जंगल बेल्स प्रकृति शिविर २५ एकड़ के उर्वर वन में फैला हुआ है। यहाँ तुम तम्बुओं में, लकड़ी की झोंपड़ियों में, कुटियों में या शयनागारों में ठहर सकते हो। रेस्तरां, कॉफी शॉप, प्रकृति-पुस्तकालय, बुर्ज, झूला जैसे सभी आधुनिक सुविधाएँ उपलब्ध हैं।

तुम निकट के जंगलों, पहाड़ियों तथा गाँवों में प्रकृति की पगडंडियों पर मार्गदर्शन के लिए प्रशिक्षित गाइड की सहायता ले सकते हो, जो पक्षियों की भिन्न-भिन्न प्रजातियों को पहचानने में मदद कर सकते हैं। पक्षी-प्रेक्षकों के लिए टायडा भगवान का वरदान है। लगभग ३५० पक्षी-प्रजातियों को इस क्षेत्र में देखा जा चुका है। यदि तुम सच्चा 'जंगली' बनना सीखना चाहते हो तो तुम्हें अनेक कलाओं में प्रशिक्षित करने के लिए इच्छुक शिक्षक मिल जायेंगे। जैसे- खोज चिह्न पहचानना, बोलियाँ पहचानना, गुप्त स्थानों को खोजना, बाघ की आँखों में घूरना यदि कोई मिल जाये तो। टायडा के आस-पास के जंगलों में रहनेवाले पशुओं में हिरण, बार्किंग हिरण, स्लॉथ बेयर, जंगली सूअर और तेन्दुआ देखे गये हैं।

मनोरम पहाड़ियाँ इतनी निकट हैं कि जाने को जी चाहता है। पर्वतीय पदयात्रा (ट्रेकिंग) और शिला आरोहण का भी मन कर सकता है।

वहाँ कैसे पहुँचें : वाइजैग से टायडा के लिए किराये पर कार मिलती है। किन्तु ट्रेन अधिक सुविधाजनक है। वाइजैग से टायडा तक की रेलयात्रा मार्ग में सर्वत्र हरियाली, पहाड़ियों, घाटियों, जलप्रपातों और अनगिनत सुरंगों के कारण विस्मयकारी रूप से सुषमा से भरी हुई है। या आप आन्ध्र प्रदेश पर्यटन विकास निगम द्वारा आयोजित पैकेज टूर में हाई-टेक बस से यात्रा कर सकते हैं।

माया सरोवर

8

(जयशील और सिद्धसाधक जल-प्रवाह से किसी तरह अपने को बचा सके। पेड़ में लटक रहे एक बौने को उन्होंने बचाया। उस समय भेड़ों के रथ में बैठी बौनों की रानी वहाँ आयी। वह अपने शत्रुओं के बारे में बता ही रही थी कि इतने में एक भयंकर जंतु ने उनपर एक बड़ा पत्थर फेंका।) - उसके बाद

जयशील और सिद्धसाधक ने आश्चर्य-भरे नेत्रों से उस भयंकर जंतु को देखा। और देखा कि उसके बग़ल में एक महाकाय आदमी भी खड़ा है। जयशील को लग रहा था कि मैंने इस आदमी को इसके पहले कहीं देखा है। इतने में भयंकर जंतु का फेंका हुआ वह बड़ा पत्थर उनसे थोड़ी दूर आ गिरा।

भेड़ों के वाहनों पर जो बौने आये थे, वे भय के मारे थरथर काँपने लगे। बौनों की रानी ने जयशील और सिद्धसाधक से कहा, ''महायोद्धाओ, जिस बलिष्ठ व्यक्ति ने इस जंतु को पालतू बना लिया है, वह दस-पंद्रह दिनों से बहुत सता रहा है। वे बौने हमसे छोटी जाति के हैं। वे हमें अपना गुलाम बनाना चाहते हैं। वे उसकी सहायता से हमपर किसी भी क्षण हमला कर सकते हैं।''

जयशील और सिद्धसाधक को रानी की निस्सहाय स्थिति पर दया आयी। उन्हें स्पष्ट

जयशील ने जैसे ही बाणों की बात की, बौनों का सेनाधिपति डर गया और रानी की तरफ़ देखने लगा।

उसने रानी से कहा, ''महारानी, हमारी प्रथा के अनुसार हम बाणों को छू नहीं सकते। उन्हें उपयोग में नहीं ला सकते। पर जंगल में मुझे जो धनुष-बाण मिले हैं, उन्हें मैंने अपने घर में सुरक्षित रखा है।''

बौनों की रानी नाराज़ हो कुछ कहने ही वाली थी कि जयशील ने उसे शांत करते हुए कहा, ''रानी, उन बाणों को तुरंत मंगवाने का प्रबंध करोगी तो उस नरवानर की हिंसा से तुम लोगों को छुटकारा दिला सकता हूँ। फिर जब उससे मेरा आमने-सामने युद्ध होगा, उसके लिए आवश्यक बाण मैं खुद तैयार कर लूँगा।''

रानी ने अपने सेनाधिपति की ओर नज़र दौड़ायी। सेनाधिपति तुरंत अपने घर से बाण ले आने निकल पड़ा।

दीख रहा था कि ये बौने साहसी हैं, पर वे उस जंतु के कारण बहुत ही भयभीत हैं।

इतने में जो आदमी नर वानर के पीछे था, तलवार की नोक को उसकी पीठ से सटाया और कुछ आदेश दिया। नरमानव छलांग मारता हुआ गया और पास ही के एक बडे पत्थर को उठाने की कोशिश में लग गया।

''साधक, लगता है कि फिर से वह हमपर पत्थर फेंकनेवाला है। परंतु उस बेवकूफ़ को मालूम नहीं कि दिन में ऐसे पत्थरों के वार से बचना आसान है।''

फिर उसने बौनों की रानी से कहा, ''तुम्हारे लोग शिकार करने के लिए जिन बाणों को उपयोग में लाते हैं, उनमें से एक बाण को ले आने का तुरंत इंतजाम करो।''

इतने में नरवानर ने अपने हाथ में एक और पत्थर लिया। उसकी कमर में बंधी लोहे की जंजीर को जिस आदमी ने पकड़ रखा था, वह ज़ोर से चिल्लाने लगा और तलवार की नोक उसकी पीठ में चुभोने लगा।

वह चिल्लाहट सुनते ही जयशील ने सीटी बजायी और कहा, ''सिद्धसाधक, अब मैं जान गया कि यह आदमी कौन है। यह हमारे अमरावती नगर का ही आदमी है। इसी के कारण मुझे अपना देश छोड़ना पड़ा। बहुत पहले यह

हमारे राजा रुद्रसेन के अश्वदल का सरदार था। इसका नाम है, कृपाणजित्त।

इतने में बौनों का सेनाधिपति बाण ले आया। उसने उन बाणों को जयशील के क़दमों के सामने रखा। जयशील ने बाणों की परीक्षा की। वे बहुत ही मज़बूत थे। कुल छः बाण थे और वे पैने भी थे।

सिद्धसाधक ने भी बाणों को हाथ में लेकर उनकी परीक्षा की और संतृप्त होते हुए कहा, "जयशील, क्या कृपाणजित्त को और वानर को अपने अस्त्रों का शिकार बनाने जा रहे हो?"

जयशील ने हँसते हुए कहा, "साधक, हम उनसे बहुत दूर हैं। यहाँ से बाण चलाकर उन्हें मार डालना क्या इतनी आसान बात है? ये तो मामूली बाण हैं। ब्रह्मास्त्र या नागास्त्र थोड़े ही हैं।"

बौनों की रानी ने अपने सेनाधिपति की ओर देखा, मानों वह उससे जानना चाहती है कि इस विषय में तुम्हारा क्या अभिप्राय है। तब सेनाधिपति भेड़ पर बैठा हुआ था। उसने बर्छी हाथ में उठाते हुए कहा, "महोदय, बस, उन दुष्टों को अपने बाण का निशाना बनाइये। आपका बाण जैसे ही उन्हें जा लगेगा, वे भयभीत हो जायेंगे। तब हम उनपर आक्रमण करेंगे और पहाड़ के निचले भाग तक उन्हें भगाकर ही दम लेंगे। हो सका तो उनकी बस्ती पर पिल पड़ेंगे और उसमें आग लगा देंगे।"

सिद्धसाधक ने भी तुरंत अपना शूल उठाते

हुए कहा, "जयशील, यह अच्छा मौका है। निशाना लगाकर बाण फेंको। नरवानर भी जंजीर तोड़कर उस बौने को पकड़ना चाहता है।"

जयशील ने धनुष पर बाण चढ़ाते हुए निशाना बांधा और बाण फेंका। बाण तेज़ी से जाकर वानर की कमर में जा लगा। दूसरे ही क्षण वानर हाहाकार करने लगा और उसने एक बौने को पकड़कर पहाड़ी पर से नीचे फेंक दिया। वह बौना जब हाहाकार करता हुआ हवा में तैरता हुआ नीचे गिरने लगा तब सेनाधिपति ने अपने अनुचरों को सावधान किया। भेड़ों पर सवार और स्थलसेना के सिपाही चिल्लाते हुए, भाले ऊपर उठाते हुए तेज़ी से पहाड़ी पर चढ़ने लगे।

बौनों के सेनाधिपति व उसके आदमियों

को पहाड़ी पर चढ़ते हुए देखकर उनका सामना करने के लिए कृपाणजित्त अपने आदमियों को प्रोत्साहित करने लगा। जयशील ने उन्हें और उनकी तैयारी को देखते हुए कहा, ''साधक, अब हमें रानी के सैनिकों की अवश्य सहायता करनी होगी। उस कृपाणजित्त को देखा? वह जंगली का वेष पहना हुआ है। फिर भी मैंने उसे पहचान लिया। उसने भी मुझे पहचान लिया होगा।''

तब सिद्धसाधक ने बौनों की रानी से कहा, ''अच्छा इसी में है कि तुम यहीं रहो। हम दोनों तुम्हारे सैनिकों के साथ-साथ जायेंगे और तुम्हारे शत्रुओं का सर्वनाश करेंगे।''

फिर जयशील व सिद्धसाधक पहाड़ी पर तेज़ी से चढ़ने लगे। उन्होंने सेनाधिपति से कहा, ''सेनाधिपति, अपने सैनिकों से ज़रा रुक जाने को कहो। वानर शायद तुम लोगों पर फिर से पत्थर फेंके।''

इसपर सेनाधिपति ने कहा, ''आप उस भयंकर जंतु से और उसके साथ ही जो बलिष्ठ व्यक्ति है, उससे हमारी रक्षा कीजिए। वे हमारी हानि न पहुँचायें, इसका ख्याल रखिए। हम गडेकोंडा दुष्ट को व उसके अनुचरों को भालों से चीर डालेंगे और पहाड़ी के नीचे लुढ़का देंगे।''

इतने में नरवानर ने एक बड़ा पत्थर उठाया और गिराने ही वाला था। तब सिद्धसाधक ने चिढ़ते हुए कहा, ''छी, छी, लगता है, इस वानर को पत्थर फेंकने के सिवा कोई भी विद्या आती नहीं। अपना शूल भोंक दूँगा और इससे अपना पिंड छुडाऊँगा।'' यह कहते हुए वह शूल लिये वानर की तरफ़ तेज़ी से बढ़ा।

जयशील ने भाँप लिया कि ऐसा करके सिद्धसाधक अपनी जान को ख़तरे में डालनेवाला है। उसने उसे रुक जाने के लिए कहा और वानर पर खुद बाण चलाया। बाण का निशाना चूक गया और वह जाकर लोहे की जंजीर से लगा, जो कृपाणजित्त के हाथ में थी। दूसरे ही क्षण कृपाणजित्त ने सर उठाकर अपने शत्रु को देखा और पहचान गया कि वह जयशील है।

कृपाणजित्त ने दूसरे आदमी सरदार कोंडा से कहा, ''देखो! शत्रुओं पर हमला बोल देने

का यह समय नहीं है। अच्छा इसी में है कि हम यहाँ से अभी निकल जाएँ।'' कहते हुए वह नरवानर को पहाड़ी के नीचे ले जाने की कोशिश करने लगा।

इतने में सरदार गडेकोंडा ने जयशील व सिद्धसाधक को ग़ौर से देखा और कहा, ''महानुभाव, आपकी आज्ञा का पालन करूँगा। आप बहुत बड़े योद्धा हैं, शूर-वीर हैं। आप और नरवानर एकदम उनपर टूट पड़ें और उस धनुषधारी व शूलवाले को मार डालें तो अच्छा होगा। क्या आपसे यह संभव नहीं? उस दौरान हम सब उस दुष्ट रानी के सब सैनिकों को अपने भालों व बर्छियों से चीर डालेंगे।''

उसकी बातों पर कृपाणजित्त ने कोई ध्यान नहीं दिया। वह नरवानर को पकड़कर जबरदस्ती पहाडी के नीचे ले जाने लगा। फिर नाराज़ होते हुए उसने सरदार गडेकोंडा से कहा, ''क्या तुमने मुझे बाज़ समझ रखा है कि उड़कर अपने शत्रुओं पर टूट पड़ूँ। उन्हें मार ड़ालने का एक और उपाय है। पहले सब बस्ती में पहुँच जाओ। मेरा कहा मानो। मेरी आज्ञा का पालन करो।''

सरदार गडेकोंडा ने तुरंत अपने अनुचरों को आज्ञा दी कि वे सबके सब बस्ती में जाकर इकट्ठे हो जाएँ। फिर वे पहाड़ी से नीचे उतरने लगे। शत्रुओं को भागता हुआ देखकर बौनों के सेनाधिपति से जयशील ने कहा, ''सेनाध्यक्ष, यह तुम्हारे लिए अच्छा मौक़ा है। उनका पीछा करो, उनपर भाले चलाओ, पहाड़ी पर से पत्थर लुढ़काओ और जितने आदमियों को मार सकते हो, मार डालो।''

सेनाध्यक्ष ने अपने सैनिकों को सावधान करते हुए कहा, ''अरे शूरवीर गडेकारानी के सैनिको, बाघों व सिंहों की तरह शत्रुओं पर लपको। उन सैनिकों को अपने भालों का शिकार बनाओ। वह भयंकर जंतु भाग रहा है। अब उससे हमें डरने की कोई ज़रूरत नहीं।''

सेनाध्यक्ष की बातों से सैनिकों में उत्साह भर आया। वे आगे बढ़ते गये। शत्रुओं के कुछ सैनिकों को उन्होंने पकड़ लिया। रानी के सैनिकों ने भालों से उन्हें घायल कर दिया और पहाड़ी पर से नीचे लुढ़का दिया।

सिद्धसाधक भी यह देखकर जोश में आ

राजा बना हुआ है।'' सिद्धसाधक ने कहा।

जयशील इसका जवाब देने ही वाला था कि इतने में रानी के सेनाध्यक्ष ने वहाँ आकर कहा, ''महोदय, शत्रु दुम दबाकर भाग गये। उनके कुछ सैनिकों को हमने मार भी डाला। आज्ञा दीजिए, हम अब क्या करें?'' जयशील ने कहा, ''अब चुपचाप पहाडी से उतरना और रानी के पास चले जाना। हम दोनों भी जल्दी ही वहाँ पहुँच जायेंगे।''

सेनाध्यक्ष ने सैनिकों को आज्ञा दी कि वे सबके सब रानी के पास पहुँच जाएँ। सिर्फ एक सैनिक को वहाँ छोड दिया, जिसे बताया गया कि वह जयशील व सिद्धसाधक को रानी के पास पहुँचने के लिए रास्ता दिखाये। फिर वे जयजयकार करते हुए नीचे उतरने लगे।

सिद्धसाधक थोडी देर तक गडेकोंडा वालों की बस्ती की ओर देखता रहा और कहा, ''जयशील, इन बौनों के झमेले में पड़कर हमने ग़लती की। कहो, आगे हम क्या करें? हमारा लक्ष्य क्या है?''

''साधक, शांत हो जाओ। हम जान-बूझकर थोड़े ही यहाँ आये। इन सबका मूल है, मगर का आकारवाला वह दुष्ट मकरकेतु। हम लोग निकले, अपहरण किये गये कनकाक्ष महाराज के बच्चों को ढूँढ निकालने और उन्हें ले जाने के लिए। यहाँ आकर हम इन अरण्यवासियों के पारस्परिक झगड़ों में फंस गये। इसपर मुझे भी आश्चर्य होता है। जो भी हो, यहाँ से चले

गया और ''जय महाकाली'' कहकर चिल्लाता हुआ जयशील से बोला, ''देखते क्या हो? चलो, उन बौनों की बस्ती में चलते हैं। वही वह बस्ती है, जो पहाड़ी के नीचे हमें दिखायी दे रही है। वहाँ जाकर तुरंत उनपर टूट पड़ेंगे और कृपाणजित्त और गडेकोंडा के बौने सैनिकों का काम तमाम कर देंगे।''

उसकी बातों पर जयशील हँस पड़ा और बोला, ''साधक, हमें उन्हें मार डालने की कोई ज़रूरत नहीं है। वे हमारे शत्रु नहीं हैं। हो सके तो उन दोनों के बीच मित्रता स्थापित करने की हम कोशिश करेंगे।''

''कृपाणजित्त हमारा जानी दुश्मन है। क्या उसे भी छोड़ दें? क्या उसके पालतू पशु को भी छोड़ दें? उसी की सहायता से वह यहाँ का

जाने के पहले हमें उस कृपाणजित्त को मौत के घाट उतारना है।'' जयशील ने कहा।

''महाकाली की कृपा हो तो उसके साथ-साथ उस नरवानर को भी मार ड़ालेंगे और उसकी खाल उधेड़ेंगे। ऐसे विचित्र मृगों की खाल पर पद्मासन लगाकर ध्यान में लग जायेंगे तो कहते हैं कि इस जन्म में न सही, अगले जन्म में ही सही, श्रेष्ठ योगी बन जायेंगे। अब चलो, बड़ी भूख लगी है। बौनों की रानी की बस्ती में चलते हैं।'' फिर दोनों वहाँ से निकल पड़े।

जयशील और सिद्धसाधक पहाडी पर जब ये बातें कर रहे थे तब पेड़ों के पीछे खड़े बौना गड़ेकोंडा और कृपाणजित्त के बीच में तू तू मैं मैं हो रहा था। एक-दूसरे को गाली दे रहे थे। दोनों एक-दूसरे की निंदा करते हुए कह रहे थे कि तुम्हारी ही वजह से यह सब हुआ।

सरदार गडेकोंडा ने कृपाणजित्त पर ताना कसते हुए कहा, ''आप देखने में हृष्ट-पुष्ट हैं, महाकाय हैं, परंतु आपमें साहस रत्ती भर भी नहीं है। आप कायर हैं। शत्रुओं से डरकर हमसे पहले ही आप भाग निकले। जिस नरवानर की शक्ति की प्रशंसा करते हुए आप थकते नहीं, वही पालतू नरवानर आपको मार डालना चाहता था।''

कृपाणजित्त ने उसके इस ताने पर दांत पीसते हुए कहा, ''अरे ओ अंधे कोंडा, मैं शत्रुओं से डरकर नहीं भागा। समय हमारे लिए अनुकूल नहीं है, इसलिए चला आया। मुझपर बाण चलानेवाले जयशील नामक उस कट्टर दुश्मन को कल सूर्योदय के पहले नहीं मार ड़ाला तो मेरा नाम कृपाणजित्त नहीं। अब रही नरवानर की बात। बंदर की तरह उसे मेरी बातों पर नाचना होगा, नचाकर ही छोड़ूँगा। लो, इसका सबूत।'' फिर उसने गडेकोंडा को दिखाते हुए, नरवानर से कुछ कहा।

दूसरे ही क्षण नरवानर ने गडेकोंडा को पकड़कर उठाया और ज़ोर-ज़ोर से चिल्लाने लगा। अपने मालिक की जान को खतरे में पाकर गडेकोंडा के अनुयायी भाले संभाले, नारे लगाते हुए नरवानर व कृपाणजित्त की ओर बढ़ने लगे।

(सशेष)

संतोष का रहस्य

शिव कृष्णगिरि के ज़मींदार के दीवान में काम करता था। उसके चेहरे पर हमेशा हँसी व्याप्त रहती थी। अन्य कर्मचारियों की समझ में यह नहीं आता था कि वह छोटी नौकरी करते हुए भी कैसे हमेशा प्रसन्न रहता है। ख़ास करके वहीं काम करनेवाले माधव को इस बात पर आश्चर्य होता था। एक दिन दोपहर को भोजन करते हुए उसने शिव से इसका कारण पूछा।

शिव ने हँसते हुए कहा, ''यह थोड़े ही बड़ा काम है। जो वेतन मिलता है, उसके चार हिस्से करता हूँ। पहला हिस्सा कर्ज़ चुकाने के लिए उपयोग में लाता हूँ। दूसरा हिस्सा अपने लिए रखता हूँ। तीसरे हिस्से से पुण्य-कार्य करता हूँ। चौथे भाग को ब्याज पर देता हूँ।''

''तुम्हें तो कम वेतन मिलता है। फिर ब्याज पर देना कैसे संभव है?'' माधव ने कहा।

''कर्ज चुकाने से मेरा मतलब है, मुझे जन्म देनेवाले माता-पिता के लिए खर्च करता हूँ। अपने लिये से मेरा मतलब है, अपने लिए और अपनी पत्नी के लिए खर्च करता हूँ। पुण्य-कार्यों से मेरा मतलब है, अपनी दीदी व बहनों के लिए खर्च करता हूँ। अब रहा, चौथा हिस्सा, जो ब्याज पर देने से संबंधित है। वह हिस्सा बच्चों को पढ़ाने-लिखाने के लिए उपयोग में लाता हूँ, क्योंकि बड़े बनकर वे ही हमारी देखभाल करेंगे। उनपर जो खर्च करता हूँ, वह ब्याज पर देना ही हुआ न?'' शिव ने हँसते हुए विवरण दिया।

माधव समझ गया कि आमदनी कम होते हुए भी, उसे आवश्यकताओं के अनुसार खर्च करने के कारण ही शिव हमेशा खुश रह पाता है।

- मंजु भारती

सत्यान्वेषक

धुन का पक्का विक्रमार्क फिर से पेड के पास गया। पेड़ से शव को उतारा और उसे अपने कंधे पर डाल लिया। फिर यथावत् श्मशान की ओर बढने लगा। तब शव के अंदर के बेताल ने कहा, ''राजन्, अज्ञान और मूर्खता की भी कुछ सीमाएँ होती हैं। पर तुम इन सीमाओं को पार करते जा रहे हो। मैंने तुमसे बारम्बार पूछा कि आखिर तुम्हारा लक्ष्य क्या है, परंतु तुमने कभी भी उत्तर नहीं दिया। मैंने कितने ही ऐसे ज्ञानी, विवेकी तथा तपोसंपन्न व्यक्तियों को देखा, जो ग़लती कर बैठते हैं। बिना सोचे-विचारे निर्णय ले लेते हैं। इससे वे जीवन-लक्ष्य से दूर जाकर गुमराह हो जाते हैं। तुम्हें सही रास्ते पर

चल सकता था, हवा में उड़ पाता था। पर वह इन्हें महान शक्तियाँ मानने के लिए तैयार नहीं था। उसका विचार था कि ये सिद्धियाँ क्षणिक हैं। मृत्यु पर विजय पानेवाली शक्ति ही महोन्नत और शाश्वत शक्ति है। इसी शक्ति को पाने के लिए वह फिर से घोर तपस्या में लीन हो गया।

शशांक की इस घोर तपस्या ने गंधर्व लोक में तहलका मचा दिया। उसकी तपस्या से उनमें भय पैदा हो गया। गंधर्व राजा को संदेह हुआ कि शशांक उसके सिंहासन पर आसीन होने के लिए ही यह घोर तपस्या कर रहा है। इसलिए उसने ठान लिया कि शशांक से कोई पाप कराऊँ और उसकी तपस्या को निष्फल कर दूँ। इसके लिए उसने एक उपाय सोचा।

लाना मेरा कर्तव्य है। इस कर्तव्य से प्रेरित होकर मैं शशांक नामक एक तपोसंपन्न व्यक्ति की कहानी सुनाने जा रहा हूँ।'' फिर बेताल शशांक की कहानी यों सुनाने लगा।

शशांक सुवर्णपुरी के राजपुरोहित का इकलौता बेटा था। बचपन से ही शशांक को सांसारिक विषयों में कोई रुचि नहीं थी। वह क्रमशः विरक्त होता गया और लौकिक सुखों को तजकर पास के अरण्य में तपस्या करने लगा।

कुछ सालों तक उसने घोर तपस्या की। फिर बाद उसने कंद, मूल, फल, खाना भी छोड़ दिया। केवल तुलसी जल पीकर ही वह जीने लगा। तपस्या करके उसने अनेक सिद्धियाँ साधीं। अलौकिक शक्तियाँ पायीं। पानी पर वह

गंधर्व राजा दैवज्ञ के रूप में सुवर्णपुरी गया और राजा से मिलकर कहा, ''राजन्, आपके पुत्र स्वर्णकीर्ति में इस संपूर्ण विश्व का सम्राट बनने की क्षमता है। पर इसमें एक छोटी-सी बाधा है। पिता होते के नाते उस बाधा को हटाना क्या आपका कर्तव्य नहीं?''

''मानता हूँ कि यह मेरा कर्तव्य है और मैं अपना कर्तव्य अवश्य निभाऊँगा। कहिए, मुझे क्या करना होगा।'' राजा ने पूछा।

''सर्वजीवकोटि याग करना होगा। इसका यह अर्थ हुआ कि आपके राज्य भर में जितने पक्षी और जंतु हैं, उनमें से एक-एक की यज्ञ में बलि देनी होगी,'' दैवज्ञ ने कहा।

''पर एक बात है,'' दैवज्ञ ने रुक कर रहा।

राजा ने पूछा, ''कहिए, वह बात क्या है?''

''पशुओं की बलि साधारण मनुष्य के हाथों नहीं होनी चाहिए। उस तपोसंपन्न को ही यह कार्य करना चाहिए, जिसने अपनी इंद्रियों पर विजय पायी है।'' दैवज्ञ ने शर्त बतायी। फिर कहा, ''वह ऐसा तपोसंपन्न हो, जिसने एक वर्ष तक लगातार तुलसी जल पिया हो।''

''भला ऐसा तपोधनी कहाँ मिलेगा?'' राजा ने शंका व्यक्त की।

''प्रयत्न करोगे तो अवश्य मिलेगा। मनोरथ सिद्धिरस्तु,'' यों आशीष देकर दैवज्ञ चला गया।

इस बात पर राजा बेहद खुश था कि उसका बेटा सम्राट बनेगा। एक पिता को, एक राजा को इससे बढ़कर क्या चाहिए। उसने ठान लिया कि किसी भी परिस्थिति में यज्ञ कराके ही रहूँगा। उसने आज्ञा भी दी कि राज्य में जितने भी प्रकार के पशु-पक्षी हैं, उनमें से एक-एक को पकड़ा जाये और यज्ञ में उनकी बलि देने के लिए सन्नद्ध किया जाये। उसने मुनादी भी पिटवायी कि राज्य की जनता के क्षेम के लिए सर्वजीवकोटि यज्ञ संपन्न होनेवाला है। और इसके लिए एक ऐसे तपोसंपन्न की आवश्यकता है, जिसने अपनी भूख-प्यास पर काबू पाया हो। उस घोषणा के द्वारा लोगों से विनती की गयी कि किसी को कोई ऐसा उत्तम व्यक्ति दिखायी पड़े तो वह राजा को सूचित करे।

इस घोषणा के पाँचवें दिन राजा के दर्शन करने एक भील आया। उसने राजा को बताया कि उसने जंगल में एक निराहार तपस्वी को देखा है।

राजा ने मंत्री को बुलाकर कहा, ''आप तुरंत जाइये और किसी भी प्रकार से उस तपस्वी को समझा-बुझाकर यहाँ ले आइये।''

मंत्री ने तपस्वी शशांक से मिलकर पूरा वृत्तांत बताया और कहा, ''इस यज्ञ से राज्य का व राज्य की जनता का कल्याण होगा। आप ही के हाथों यह संभव है। राजा इसके बदले आप जो भी चाहें, देने के लिए तैयार हैं। वे आपको प्रधान सलाहकार के पद पर नियुक्त करेंगे। भविष्य की पीढ़ियों को आप प्रशिक्षण दें और उन्हें उत्तम नागरिक बनाएँ, इसके लिए आपके आश्रम के समीप ही एक गुरुकुल पाठशाला की स्थापना भी करायेंगे।'' पर शशांक ने मंत्री के प्रस्ताव को ठुकरा दिया और कहा, ''यज्ञ के नाम पर

जंतुओं की बलि देना पाप है। यह मेरे सिद्धांत के विरुद्ध है।''

''राजा आपके लिए प्रशांत उद्यानवन के बीचोंबीच भव्य भवन बनवायेंगे। हर प्रकार का सुख वहाँ उपलब्ध होगा।'' मंत्री ने कहा।

''मैं एक तपस्वी हूँ और इसी जीवन में मुझे सुख मिलता है। मेरी लक्ष्य-सिद्धि के लिए यह अरण्य ही मेरे लिए अनुकूल स्थल है,'' शशांक ने दृढ स्वर में बताया।

मंत्री जान गया कि इस तपस्वी को मनाना संभव नहीं तो वह राजधानी लौट आया। उसने राजा को पूरा विवरण दिया। राजा ने कहा, ''जाइये, उस तपस्वी से कहिये कि मैं अपनी पुत्री के साथ उसका विवाह रचाऊँगा और अपना राज्य भी उसके सुपुर्द कर दूँगा।''

राजकुमारी भार्गवी अपने पिता की बातें सुनकर भौचक्का रह गयी। राजा पुत्री का मनोभाव समझ गया और उससे कहा, ''डरो मत। पहले यज्ञ पूरा होने दो। बाद में जो होगा, मैं संभाल लूँगा।''

पिता की नीयत भार्गवी को पसंद नहीं आयी, पर जनता के कल्याण को दृष्टि में रखते हुए वह चुप रह गयी।

राजकुमारी भार्गवी भी मंत्री के साथ जंगल गयी। मंत्री ने वहाँ पहुँचकर तपस्वी से कहा, ''महात्मा, आप पधारकर यज्ञ संपन्न करेंगे तो यह राजकुमारी भार्गवी आपकी धर्मपत्नी बनेगी। राजा मार्तण्डवर्मा के बाद आप ही सुवर्णपुरी के राजा होंगे। यह महाराज का वादा है।''

शशांक ने युवरानी को देखा और देखता ही रह गया। उसके अनुपम सौंदर्य पर वह मुग्ध हो गया। अपने जीवन के लक्ष्य को भी भुलाकर उसने कहा, ''इस सौंदर्यराशि से विवाह करूँगा और राज्य का राजा बनूँगा।''

सुवर्ण रथ में बैठकर तीनों स्वर्णपुरी जाने के लिए निकले।

यज्ञशाला तैयार की गयी। हज़ारों पशु-पक्षी विशाल मैदान में लाये गये। राजा और मंत्री खड्गधारी शशांक के साथ वहाँ आये। यज्ञकुंड के पार्श्व में ही बलि के लिए एक हाथी खड़ा कर दिया गया। हाथी की बलि चढाने के लिए शशांक ने खड्ग उठाया। हाथी डर के मारे चिंघाडने

लगा। तब वहाँ लाये गये सभी पशु-पक्षी बड़े ही दीन स्वर में विलाप करने लगे।

शशांक चौंक उठा और खड्ग दूर फेंक दिया। फिर राजा की ओर मुड़ कर बोला, "प्रभु, क्षमा कीजिए। मैं यह पाप नहीं करूँगा। बल्कि पाप करने की जो मुझमें प्रवृति जगी, उसका प्रायश्चित करूँगा। इसके लिए मुझे अनुमति दीजिए।" यह कहकर शशांक मंत्रमुग्ध जनता के बीच में से होता हुआ वन की ओर बढता चला गया।

बेताल ने शशांक की कहानी सुनाने के बाद कहा, "राजन्, शशांक राजकुमारी के अद्भुत सौंदर्य पर मुग्ध हो गया। राजा होने के प्रलोभन में आकर जंतुओं की बलि चढ़ाने के लिए भी वह सन्नद्ध हो गया। परन्तु पशुओं की बलि चढ़ाने से पूर्व उसके मन में अकस्मात् परिवर्तन क्यों हो गया? मेरे संदेह के समाधान जानते हुए भी चुप रह जाओगे तो तुम्हारे सिर के टुकड़े-टुकड़े हो जायेंगे।"

इसके उत्तर में राजा विक्रमार्क ने कहा, "शशांक के मन में अकस्मात परिवर्तन का कारण न ही उसका भय है या न ही उसके मन की चंचलता है। न ही अपनी आशा को भंग होते हुए देखकर उसने ऐसा किया। हमें यहाँ यह बात भुलानी नहीं चाहिए कि शशांक को सांसारिक विषयों में कोई अभिरुचि नहीं थी। वह एक सत्यान्वेषी था। ऐसा एक विरागी राजकुमारी को देखते ही विचित्र अनुभूति के वश हो गया। राज्य की आकांक्षा लिये वह मंत्री व राजकुमारी के साथ सुवर्णपुरी चला आया। यह सबकुछ गंधर्वों का मायाजाल था। इसका मतलब यह हुआ कि गंधर्वों ने उसके मन में भ्रम उत्पन्न कर दिया। हाथी की चिंघाड़ व पशु-पक्षियों के दीन विलाप ने उस भ्रम को दूर कर दिया। उससे भ्रम का वह हल्का परदा हट गया। उसी क्षण वह समझ गया कि वह कितना बड़ा अपराध करने जा रहा है। इसीलिए उसने राजा से क्षमा माँगी और अपने जीवन-लक्ष्य को साधने के लिए वह फिर से तपस्या करने निकल पड़ा।"

राजा के मौन-भंग में सफल बेताल पुनः शव सहित ग़ायब हो गया और फिर से पेड़ पर जा बैठा।

- रमा चौधरी

भारत की पौराणिक कथाएँ - ५

भगवान के साथ द्यूतक्रीड़ा

शहर में जुआरियों की भरमार थी, लेकिन अनाथ सोमदत्त के समान द्यूतक्रीड़ा में निष्णात कोई नहीं था। हर बार जीत उसी की होती। लेकिन वह इतना उदार-हृदय था कि सारी कमाई गरीबों पर खर्च कर देता था।

नगर के सीमान्त पर एक गुफा में एक महात्मा रहते थे। सोमदत्त उनका बहुत आदर करता था। वह प्रायः स्वादिष्ट फल या अन्य खाने की चीज़ खरीद कर उन्हें भेंट करता था। वह अक्सर उनसे यह भी कहता था, "मैं मूर्ख और अज्ञानी हूँ। मैं नहीं जानता कि प्रार्थना कैसे की जाती है। हे महात्मा जी, क्या कृपया आप भगवान से मेरी ओर से यह अनुरोध कर देंगे कि वे मुझपर कृपा करें?"

महात्मा सलाह देते, "वत्स! अपने अज्ञान की चिंता न करो। हमेशा भगवान को याद करते रहो। अपने सभी कर्म उन्हें निवेदित कर दो। इससे तुम्हारा कल्याण होगा।"

सोमदत्त की आय का एकमात्र स्रोत जूआ था। एक दिन जब वर्षा हो रही थी, वह जूए के अनेक अड्डों पर गया, किन्तु कोई जुआरी इसके साथ खेलने के लिए तैयार नहीं हुआ। शाम होने लगी थी और सोमदत्त को भूख लग रही थी। आखिर वह जाये तो कहाँ! गाँव के ठीक बाहर एक बाग के बीचोंबीच शिव का एक मंदिर था। सोमदत्त मंदिर के भीतर गया। दीपक की टिमटिमाहट में उसने शिवलिंग के समक्ष भोजन रखा हुआ देखा। उसने भगवान के सामने

नतमस्तक होकर कहा, "मैं भूखा हूँ। यह भोजन अब आपका प्रसाद बन गया है। क्या मैं इसे खा सकता हूँ?"

उसने एक आवाज सुनी या उसे लगा कि उसने एक आवाज सुनी जिसने कहा कि "हाँ, तुम भोजन खा सकते हो।"

वह बहुत प्रसन्न था। उसने भगवान के प्रति कृतज्ञता प्रकट की और कहा, "प्रभु, मैं आपको कैसे प्रसन्न करूँ? मैं स्तुति नहीं जानता। मैं अज्ञानी हूँ। मैं सिर्फ जूआ खेलना जानता हूँ। क्या मैं आपके सामने अपनी द्यूत कला दिखाऊँ? लेकिन इसमें कम से कम दो का होना आवश्यक है।"

अचानक उसके मन में एक विचार कौंध गया। आनन्द से उछलते हुए उसने कहा, "हे प्रभु, आप क्यों नहीं खेल का साथी बन जाते! मेरा दायाँ हाथ आपका दावं चलेगा और मेरा बायाँ हाथ मेरी ओर से खेलेगा। ठीक है न?"

उसे पुनः लगा कि भगवान को इसमें कोई आपत्ति नहीं है। उसने पुनः भगवान से कहा, "यदि मैं हार गया तो मैं अपनी कुल जमा पूंजी जो मेरी फटी हुई कमीज रह गई है, तुम्हें भेंट कर दूँगा। यदि आप हार गये तो यहाँ जो चीज अच्छी लगेगी मैं ले जाऊँगा और आपको कोई आपत्ति नहीं होगी। ठीक है न?"

भगवान ने इसे भी मान लिया, सोमदत्त को ऐसा लगा। उसने जूए का एक सरल खेल बनाया और दायें हाथ से भगवान की ओर से
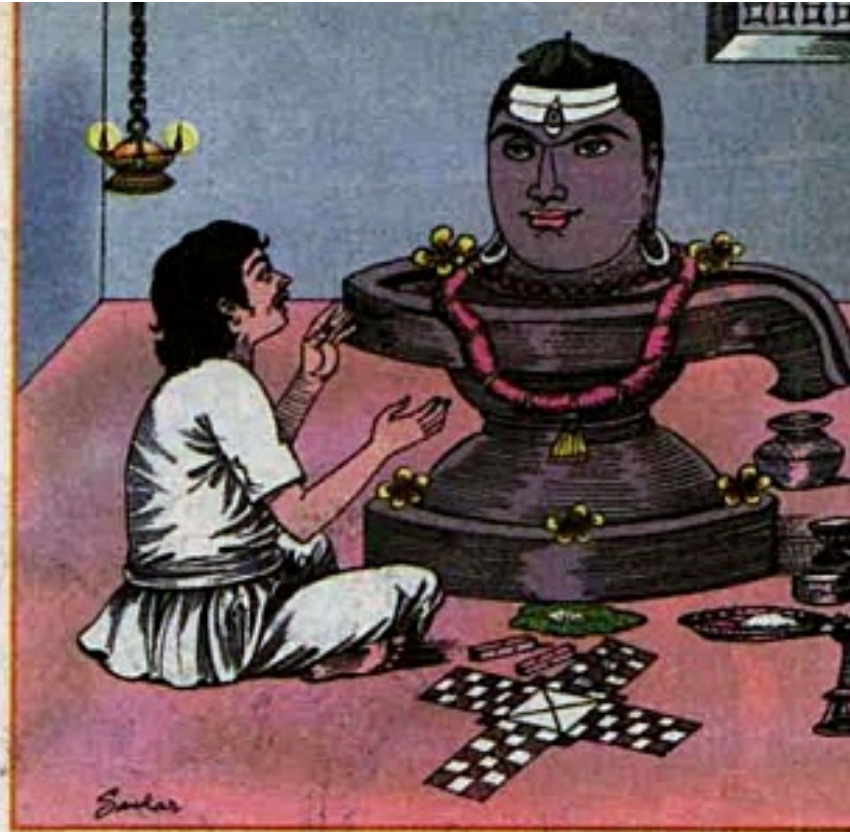
खेला तथा बायें हाथ से अपनी ओर से।

अचानक वह खुशी के मारे तालियाँ बजाने लगा। "प्रभु, आप हार गये, हार गये! अब मैं शर्त के मुताबिक जो मुझे पसन्द है ले जा सकता हूँ। है न? देखता हूँ!"

उसने दीपक उठाया और चारों ओर नज़र दौड़ाई। वहाँ धातु या पत्थर की बनी देवी-देवताओं की अनेक प्रतिमाएँ थीं। उसे दुर्गा की प्रतिमा सबसे अधिक पसन्द आई। उसने उसे उठाते हुए कहा, "मेरी माँ नहीं है। यह प्रतिमा मेरी माँ के समान होगी। मैं इसे घर ले जाऊँगा।"

"टुक, टुक" उसने एक आवाज सुनी। उसे लगा कि उसे कोई कह रहा है, "देवी-देवताओं की देख-रेख आसान नहीं है। तुम्हें विधिपूर्वक इसकी पूजा करनी होगी। क्या यह कर सकते हो? इतना ही नहीं, तुम पर चोरी का आरोप

लग सकता है और सजा मिल सकती है।''

''यह सच है।'' उसने मन ही मन सोचा और प्रतिमा जहाँ से उठायी थी, वहीं रख दी। ''तो क्या खाली हाथ जाऊँ?''

''तुम्हें माँ नहीं पत्नी चाहिए मूर्ख ! ठहरो, और मेरे पीछे छिप जाओ। तुम्हें एक अपूर्व सुंदरी मिलेगी।'' उसे किसी ने कहा, ऐसा उसे लगा।

वह प्रतिमा के पीछे छिप गया। वह पूर्णिमा की शुभ रात्रि थी। प्रति वर्ष इस रात को तिलोत्तमा नाम की एक परी इस मंदिर में भगवान के समक्ष नृत्य किया करती थी। वह अचानक वहाँ प्रकट हुई और नृत्य करने लगी। सोमदत्त उसे चकित होकर देखता रहा। जैसे ही तिलोत्तमा का नृत्य समाप्त हुआ, सोमदत्त ने उससे कहा, ''तुम जो भी हो, तुझे मेरे साथ विवाह करना होगा। भगवान ने मुझसे यही कहा है।''

प्रमुदित होकर परी ने सोमदत्त को देखा और फिर भगवान की ओर। क्या भगवान ने उसे कुछ आदेश दिया? संभवतः हाँ। ''ठीक है, युवक। चलें यहाँ से।'' उसने कहा। सोमदत्त उसके पीछे-पीछे चला और एक बाग में पहुँचा।

परी मुस्कुराती हुई बोली, ''क्या मेरे रहने के लिए तुम्हारे पास घर है? क्या मुझे खिलाने के लिए साधन हैं? क्या मेरी सेवा के लिए दासियाँ हैं?''

''शायद नहीं !'' सिर नीचे लटकाये सोमदत्त धीरे से बोला।

''इसलिए हे युवक ! तुम्हें न सिर्फ एक पत्नी चाहिए, बल्कि एक घर और कुछ धन भी चाहिए। ठीक है न?'' परी ने कहा।

''आप ठीक कहती हैं।'' लज्जित अनुभव करते हुए सोमदत्त ने कहा।

''घबराओ नहीं। मैं इसका कुछ प्रबंध करती हूँ, यद्यपि मैं स्वयं तुमसे विवाह नहीं कर सकती, क्योंकि परी को मनुष्य के साथ विवाह नहीं करना चाहिए। उसने आँखें बंद कीं और कुछ क्षणों के लिए शांत खड़ी रही। फिर वह धीरे से सोमदत्त को कुछ कहकर अन्तर्धान हो गई।

कुछ दिनों में समाचार फैल गया कि वहाँ की राजकुमारी कमलकुमारी को एक विचित्र रोग हो गया है। वह अपने को तिलोत्तमा बताती और प्रायः इन्द्र दरबार की बातें बडबड़ाती रहती। उसने खाना पीना छोड़ दिया। धीरे-धीरे वह कृशकाय और मरणासन्न हो गई। किसी वैद्य की चिकित्सा का कोई प्रभाव नहीं पड़ा। राजा

ने अन्त में घोषणा की कि जो भी राजकुमारी को ठीक कर देगा उसे मुँह माँगा इनाम मिलेगा।

सोमदत्त राजा से मिलकर बोला, "महाराज! मैं दिव्य स्वप्न से राजकुमारी को रोगमुक्त कर सकता हूँ। यदि आदेश दें तो उपचार करूँ।"

राजकुमारी राजा की एकमात्र संतान थी। वह अपने जीवन की अंतिम घड़ियाँ गिन रही थी। राजा और रानी निराश हो आसूँ बहा रहे थे। "अवश्य उपचार करो, लेकिन याद रखो, यदि मेरी बेटी को बचा न सके तो तुम्हें भी परलोक तक उसका साथ देना पड़ेगा।" दुखी और विक्षुब्ध राजा ने कहा।

सोमदत्त ने राजा और रानी से नतमस्तक हो अनुरोध किया कि कुछ क्षण के लिए राजकुमारी के साथ उसे अकेले छोड़ दें। फिर उसने राजकुमारी के कान में तिलोत्तमा के निर्देशानुसार कहा, "ओ तिलोत्तमा, तुमने मुझपर बड़ी कृपा की है। अब तुम राजकुमारी को छोड़ दो।"

इतना कहना था कि राजकुमारी ने आँखें खोल दीं और सोमदत्त को आश्चर्य से देखकर कहा, 'कैसी विचित्र बात है! अभी मैंने आपको सपने में देखा और आप सचमुच यहाँ आ गये! लेकिन मैं हूँ कहाँ? मुझे हुआ क्या है?"

"लेकिन मेरे बारे में क्या सपना देखा, ओ प्यारी राजकुमारी!" सोमदत्त ने पूछा। लेकिन राजकुमारी केवल शरमा कर रह गई। किन्तु अपनी माँ को उसने बताया कि एक परी ने उसे कहा कि मैं तुम्हें छोड़कर जा रही हूँ। कुछ ही देर में तुम्हारा होनेवाला पति आयेगा। और उसके चेहरे की एक झलक भी दिखाई दी।

कहना न होगा कि सोमदत्त और राजकुमारी का विवाह बड़े धूमधाम से हुआ और विवाह के बाद राजा का उत्तराधिकारी भी बना। राजा बनते ही पुराने शिव मंदिर के स्थान पर उसने एक विशाल भव्य शिव मंदिर बनवाया।

क्या सोच सकते हो कि उसने दूसरा अच्छा काम क्या किया? कभी नहीं। शर्त लगा लो। उसने द्यूतक्रीडा पर प्रतिबंध लगा दिया। लेकिन सभी जूआ खिलाड़ियों को राज्य की सेवा में बहाल कर लिया।

धर्म ही परमेश्वर है !

सोमनाथ मिर्जापुर गाँव के पास ही के पहाड़ पर के वरसिद्धि विनायक मंदिर का प्रधान कर्मचारी है। एक दिन जब वह सबेरे-सबेरे मंदिर जाने के लिए निकला तब उसकी पत्नी सुभद्रा ने कहा, ''पहले भी दो-तीन बार आपसे कह चुकी हूँ। आप जानते ही हैं कि हमें अपनी बेटी की शादी करनी है। अगले साल हमारा बेटा उच्च शिक्षा प्राप्त करने शहर जाना चाहता है। आपकी आमदनी में तो कोई बढ़ौती नहीं हुई। मेरी समझ में नहीं आता कि इन समस्याओं का निपटारा कैसे होगा?''

सोमनाथ जब पढ़ाई पूरी कर के नौकरी की खोज कर रहा था तभी गाँववालों ने गाँव के बीचोबीच एक तालाब खोदा। तब गणेश की एक मूर्ति उसमें से निकल आयी। गाँव के एक संपन्न आदमी ने तुरंत एक मंदिर बनवाया। और बेरोज़गार सोमनाथ की नियुक्ति मंदिर में कर दी। उसके वेतन का भी प्रबंध कर दिया गया।

क्रमशः मंदिर में आनेवाले भक्तों की संख्या बढ़ती गयी। इस मंदिर के गणेश में लोगों का दृढ़ विश्वास था, क्योंकि वे मानते थे कि वे माँगने पर सबकी इच्छाएँ पूरी करते हैं। मंदिर की प्रसिद्धि इतनी बढ़ गयी कि दूर-दूर के प्रदेशों से भी लोग पूजा करने यहाँ आने लगे। क्रमशः हुंडी से आमदनी बहुत बड़ी मात्रा में बढ़ गयी। सोमनाथ हुंडी से धन-राशि निकालता था और गिनकर सुरक्षित रखता था। आवश्यकता पड़ने पर भक्तों की सुविधाओं के लिए उस धन को खर्च करता था। लोग भी उसमें पूरा-पूरा विश्वास रखते थे और कहते थे कि कर्तव्यपरायण हो तो ऐसा हो।

- जिज्ञासु -

एक तरफ़ गणेश मंदिर की वृद्धि होती जा रही थी तो दूसरी तरफ़ सोमनाथ का परिवार भी बढ़ता जा रहा था। उसकी जिम्मेदारियाँ भी बढ़ती जा रही थीं। बेटी शादी की उम्र की हो गयी। बेटे को उच्च शिक्षा दिलानी थी। उसकी आमदनी तो जैसी की तैसी थी। जो कमाता था, वह मुश्किल से घर संभालने के लिए पर्याप्त होता था। सुभद्रा को इसी की शिकायत थी। इसीलिए बेचारी चिंताग्रस्त रहती थी। वह दिन-रात इसी को लेकर सोचती रहती थी।

असल में उसका इरादा था कि हुंडी की आमदनी में से एक भाग का उपयोग वह अपने परिवार लिए करे। सोमनाथ पहले ही से अपनी पत्नी का इरादा जानता था। पर उसे ऐसा करना क़तई पसंद नहीं था। पर सुभद्रा ने भी अपनी हार नहीं मानी। वह अपनी माँग पर डटी रही। घिसते रहने से पत्थर भी एक न एक दिन घिस ही जाता है। पता नहीं, सोमनाथ ने क्या निर्णय लिया, पर एक दिन सुभद्रा से कहा, ''ठीक है, मुझे सोचने दो। इतनी जल्दबाजी मत करो। मुझपर और दबाव मत डालो। चार-पाँच दिनों का समय तो दो।''

इस घटना के दो दिनों के बाद जब वह मंदिर के एक कमरे में बैठकर अपना काम कर रहा था तब एक किसान बैल गाड़ी में अपने पूरे परिवार के साथ आया। वह अपने साथ एक बोरा चावल भी ले आया था।

''क्या कोई मनौती है?'' सोमनाथ ने पूछा।

''हाँ, मनौती ही है। मेरी एक बालिग़ बेटी है, पर वह अपाहिज है। मैं अपनी इस अपाहिज बेटी की शादी को लेकर सदैव चिंतित रहता था। पिछले साल मैं इस मंदिर में आया और मनौती रखी कि अगर मेरी बेटी की शादी हो जाए तो

परिवार सहित यहाँ आकर बोरे भर का चावल समर्पित करूँगा। भगवान गणेश ने भी कमाल कर दिखाया। साल पूरा होने के पहले ही अच्छा वर मिल गया। शादी संपन्न होते ही हम अपनी मनौती पूरी करने यहाँ आये हैं।'' किसान खुशी के मारे फूल उठा।

''बहुत अच्छा हुआ,'' सोमनाथ ने कहा। पर किसान के चले जाने के बाद वह सोच में पड़ गया और अंत में एक निर्णय पर आया।

उस दिन रात को सुभद्रा ने अपने पति से पूछा, ''मेरी बात याद है न? आपने क्या निर्णय किया?''

''मैं तुम्हारी चाह पूरी नहीं करूँगा।'' सोमनाथ ने साहसपूर्वक मना कर दिया।

''तो बेटी की शादी कैसे करेंगे? बेटे को उच्च शिक्षा कैसे दिलायेंगे?'' सुभद्रा ने चिढ़ते हुए पूछा।

सोमनाथ ने कहा, ''मैं जो कहने जा रहा हूँ, शांतिपूर्वक सुनो। लोग कई जगहों से हमारे मंदिर में आते हैं और स्वामी के दर्शन करते हैं। हम तो हर दिन, हर समय उनकी सेवा में लगे हुए हैं। क्या वे हमारी देखभाल नहीं करेंगे? जिस दिन ये हमारे गाँव में प्रकट हुए उसी दिन मेरी जीविका के लिए उन्होंने मार्ग दिखाया। चोरी करके मैं उनकी दृष्टि में पापी नहीं बन सकता। अपना कर्तव्य निभाता रहूँगा और कोई बुरा काम नहीं करूँगा तो अच्छे दिन अवश्य आयेंगे। हम धर्म की रक्षा करेंगे तो वह हमारी रक्षा करेगा। परमेश्वर धर्मस्वरूपी ही तो हैं।'' विश्वास-भरे स्वर में सोमनाथ ने कहा।

सुभद्रा भी सत्य समझ गयी। उसमें ज्ञानोदय हुआ। वह कुछ नहीं बोली। फिर उसने इस विषय को लेकर कभी कुछ नहीं कहा।

सोमनाथ का विश्वास व्यर्थ नहीं गया। एक मित्र के द्वारा एक अच्छा रिश्ता पक्का हुआ। बेटी का विवाह अच्छी तरह से हो गया। चूँकि उसका बेटा अक्लमंद था, खूब पढ़-लिख गया। उसकी योग्यता को देखते हुए उसे छात्रवृत्ति भी मिली। और यों सोमनाथ का पारिवारिक जीवन भगवान गणेश की कृपा से शांतिपूर्वक गुज़रने लगा।

अपने भारत को जानो

डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन के प्रति सम्मान व्यक्त करने के लिए सितम्बर में उनका जन्म दिवस शिक्षक दिवस के रूप में मनाया जाता है। इस महीने की प्रश्नोत्तरी शिक्षाविदों और शैक्षणिक संस्थाओं पर आधारित है। शायद यह उतना सरल न हो। फिर भी आनन्द के लिए प्रयास करो।

१. किस भारतीय खगोल-भौतिक शास्त्री ने सन् १९५५ में कोलकाता में आण्विक भौतिकी संस्थान की स्थापना की?

२. सन् १८५७ में सिपाही विद्रोह में अंग्रेजों की विजय के लिए ईश्वर को धन्यवाद ज्ञापन के रूप में शिमला में एक विद्यालय की स्थापना की गई। उसका नाम क्या था?

३. हिन्दू पुराण में 'देवताओं का गुरु' कौन है?

४. किस भारतीय गणितज्ञ को पाई (PI) के आधुनिक मूल्य की गणना का श्रेय प्राप्त है?

५. स्थापना के समय रुरकी विश्वविद्यालय का नाम दूसरा था। वह क्या था?

६. शेक्सपियर का प्रथम फोलियो (उसके नाटकों का प्रथम संस्करण) दुर्लभ है। एक भारतीय शैक्षणिक संस्था को उसकी एक प्रति रखने का गौरव प्राप्त है। उस संस्था का नाम बताओ।

७. रवि जे. मथाई द्वारा गुजरात में संस्थापित प्रथम संस्था का नाम क्या है?

८. मैसूर विश्व विद्यालय का एक कुलपति पटियाला के राजतांत्रिक राज्य में पहले मंत्री था। उसे 'सरदार' की उपाधि दी गई थी। उसका नाम बताओ।

(उत्तर अगले महीने)

अगस्त प्रश्नोत्तरी के उत्तर

१. शनमुगम चेट्टी
२. डॉ. जाकिर हुसैन (१ वर्ष ११ महीने २० दिन)
३. १९८९
४. प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी
५. पचास
६. उपाध्यक्ष
७. आन्ध्र प्रदेश
८. माहे - पांडिचेरी राज्य
९. कर्नाटक - श्रवणबेलागोला
१०. लक्षदिव्स
११. जी.बी. पन्त कृषि विश्व विद्यालय
१२. डूरण्ड कप
१३. शहीद और स्वराज
१४. लॉर्ड कर्ज़न

कुंभ की नींद

एक गाँव में श्याम और रुक्मिणी पति-पत्नी रहते थे। लंबे अर्से के बाद उनका एक बेटा हुआ। पर वह बच्चा रोता नहीं था। उसने आँखें भी नहीं खोलीं। घबरायी हुई दादी ने उसे नोचा तो बस, वह थोड़ा हिला। पर बिल्कुल रोया नहीं। हाँ, दूध पीने के लिए मुँह अवश्य खोलता था।

यों सात दिन गुज़र गये। आठवें दिन एक साधु उनके घर आया। श्याम ने अपने बच्चे के बारे में साधु से बताया और विनती की कि कोई ऐसा उपाय बताइये जिससे मेरा बेटा ठीक हो जाए, हर बच्चे की तरह रोये-हँसे। साधु ने दंपति से बच्चे के जन्म-नक्षत्र का पता लगाने के बाद, कहा, ''देखो श्याम, तुम्हें इतना परेशान होने की कोई ज़रूरत नहीं। तुम्हारे पुत्र में कुंभकर्ण का थोड़ा-बहुत अंश है। जानते हो न, त्रेतायुग में कुंभकर्ण ने अर्ध निद्रा में उठकर युद्ध में भाग लिया। उस युद्ध में ही वह मारा गया। चूँकि उसकी निद्रा पूरी नहीं हुई, इसलिए उसका पुनः जन्म हुआ है। तुम्हारा पुत्र तो साल में बहुत दिनों तक, बहुत समय तक सोता ही रहेगा। रोने पर उसकी नींद खुल जायेगी, इसलिए वह रो नहीं रहा है।''

साधु की बातें सुनकर श्याम और रुक्मिणी थोड़ा शांत हो गये। बड़े ही प्यार से उन्होंने उसका नाम रखा, कुंभ। वे बड़े प्यार से उसका पालन-पोषण करने लगे। वह सबेरे ही उठ जाता था और दिनचर्या समाप्त कर चुकने के बाद जलपान खाकर, दूध पीकर सो जाता था। फिर दोपहर को भी जागकर खाना खा लेता था और फिर सो जाता था। वह कुछ काम करता नहीं था, केवल खाता ही रहता था, इसलिए वह मोटा होता गया।

- महर्षि -

अपने पाँचवें साल में कुंभ पाठशाला जाने लगा। मोटापे के कारण वह पैदल जा नहीं पाता था, इसलिए उसके पिता ने उसके लिए एक बैलगाड़ी का इंतज़ाम किया। फुरसत के समय बच्चे उसके शरीर से खेलते रहते थे। कुछ बच्चे उसके कान ऐंठते थे, फिर भी वह नींद से जागता नहीं था।

अब कुंभ सोलह साल का हो गया। अब वह और मोटा हो गया। इस उम्र में भी उसे पढ़ना-लिखना बिल्कुल नहीं आया। कुंभ किसी पर नाराज़ भी नहीं होता था, क्योंकि उसे भय था कि ऐसा करने पर निद्रा में भंग पड़ जायेगा। इसलिए बच्चे उसे और चाहने लगे।

श्याम और रुक्मिणी, कुंभ के भविष्य को लेकर बहुत चिंतित रहने लगे। तभी वह साधु उनके घर फिर आया, जिसने उसके जन्म का रहस्य बताया था।

कुंभ के माता-पिता के आग्रह पर साधु ने पूरा दिन बड़े ध्यान के साथ उस पर अपनी दृष्टि केंद्रित की और कहा, ''मानता हूँ, कुंभ खूब सोता है, पर है बड़ा ही बुद्धिमान। किसी भी मुश्किल काम को वह निद्रा के लिए तेजी से कर सकता है। इसलिए कोई भी विद्या सीखने की शक्ति रखता है।

''पिछले जन्म का निद्रा-भंग फल भी चूँकि अब पूरा हो चुका है, इसलिए यहीं रहकर एक महीने तक उससे विद्याभ्यास कराऊँगा।''

साधु का उपाय फलीभूत हुआ। सोने के लिए किसी भी कठिन पाठ को क्षणों में सीख लेता था और सो जाता था। बाकी बच्चे साल भर जो सीख पाते थे, वह एक महीने में ही सीख लेता था। साधु ने कुंभ की प्रशंसा करते हुए

कहा, "तुम बहुत ही फुर्तीले और होशियार हो। अब तुम किसी गुरुकुल में प्रवेश करो और बड़े-बड़े शास्त्रों का अध्ययन करो, ताकि संसार को तुमसे लाभ हो।"

"साधुवर, अधिक समय तक जागते रहना मेरे लिए संभव नहीं। आप तो महान हैं, आपके पास महान शक्तियाँ हैं। आप क्यों न मेरे सपनों में आयें और पाठ पढ़ायें?" कुंभ ने साधु से प्रार्थना की। "ठीक है, ऐसा ही करूँगा, पर एक शर्त है, तुम्हें भोजन भी सपनों में ही करना होगा," साधु ने कहा।

कुंभ ने साधु की शर्त मान ली। साधु कुंभ के सपनों में ही उसे पढ़ाने लगे। कुंभ सपनों में ही खाने लगा। पर उसका पेट भरता नहीं था, इसलिए वह पाठ भी ठीक तरह से सीख नहीं पाता था। चार दिनों के अंदर कुंभ समझ गया कि यह संभव नहीं है। कमज़ोरी के कारण वह सो भी नहीं पाता था। समय बिताने के उद्देश्य से वह गाँव भर में घूमता-फिरता रहा। तब उसे गाँव बहुत ही सुंदर लगने लगा। उससे भूख सही नहीं जाती थी, इसलिए वह गाँव के भोजनालयों में खाने-पीने लगा। वह खाना उसे बड़ा स्वादिष्ट लगने लगा।

"मेरे चारों ओर इतनी बड़ी दुनिया है। उसे देखे बिना मैं सो रहा हूँ। आँखें बंद करके जो सपना देखते हैं, उससे महान है, आँखें खोलने पर दिखाई देनेवाला यह सत्य।" उसने सत्य पर विश्वास किया और यह बात साधु से भी बतायी।

"मनुष्य बनकर जो जन्मा है, उसे चाहिए कि वह सपने देखने के लिए कम समय व्यतीत करे और सच्चाई जानने के लिए ज्यादा समय। निद्रा में जो सपने देखे जाते हैं, वे जागने पर ही सच बन सकते हैं। पर परिश्रमहीन जागरण भी निद्रा के समान है, इसलिए हर मनुष्य को अपार परिश्रम करना चाहिए और तद्द्वारा दुनिया की भलाई करनी चाहिए," यों साधु ने कुंभ को हितबोध किया।

अब कुंभ की विचार शैली में कायापलट हो गयी। क्रमशः उसने सकल शास्त्रों का गंभीर अध्ययन किया और बड़ा आदमी बना।

श्रमदान

रामापुर एक छोटा-सा गाँव था। वहाँ का राम मंदिर बिलकुल उजड़ चुका था। एक बार जब बड़े ज़ोर से बारिश और आंधी आयी तब वह लगभग गिर गया। गाँव के बड़ों ने उसके पुनरुद्धार का निश्चय किया।

गाँव के चार बड़े लोग एक दिन शामको नारायण के घर गये और उससे सहायता के लिए अनुरोध करते हुए कहा, ''इस मंदिर के पुनर्निर्माण के लिए क़रीबन दस हज़ार रुपये खर्च होंगे।''

नारायण गाँव का सबसे सुखी सम्पन्न व्यापारी था। साथ ही बहुत रामभक्त और धर्मानुरागी था।

इस पर उसने मुस्कुराते हुए कहा, ''इस मंदिर का निर्माण किसी महाराजा ने अपने शासनकाल में करवाया होगा। इस पर हज़ारों अशर्फियाँ उन्होंने खर्च की होंगी। उसकी तुलना में यह कोई बड़ी रक़म नहीं है। काम शुरू कर दीजिए।''

''आपका यह प्रोत्साहन हमें और प्रेरित करेगा।'' कहते हुए गाँव के मुखिया ने औरों की ओर देखते हुए कहा, ''आप अपने व्यापार में दक्ष हैं। आपकी दक्षता की प्रशंसा हमारे ही गाँव के लोग नहीं करते बल्कि अड़ोस-पड़ोस के गाँवों के लोग भी करते रहते हैं। आप इस गाँव में अति संपन्न व्यक्ति हैं और यह हमारा सौभाग्य है। आप जैसे संपन्न लोगों पर इस गाँव को गर्व है।''

''देखिये कमलनाथजी, मेरी इतनी तारीफ़ न कीजियेगा। मेरी बुद्धिमानी, दक्षता, संपत्ति आदि सब उसी भगवान राम की देन हैं। आज मेरे पास जो भी है, वह उसी का दिया हुआ है।'' राम मंदिर की दिशा में हाथ जोड़ते हुए नारायण ने कहा।

तब गाँव के पुरोहित कृष्ण पांडे ने हस्तक्षेप करते हुए कहा, ''आपकी राम भक्ति अमोघ

- लक्ष्मी प्रधान -

है। उसकी मैं प्रशंसा किये बिना नहीं रह सकता। मंदिर के पुनरुद्धार के लिए गाँव के बड़ों ने एक रक़म निश्चित की है। हम आशा करते हैं कि उस रक़म का एक चौथाई हिस्सा आप दान में देंगे।''

यह सुनते ही नारायण चौंक पड़ा और बोला, ''इसका यह मतलब हुआ कि आप मुझसे ढाई हज़ार रुपयों की आशा रखते हैं।'' गाँव के मुखिया ने तुरंत पूछा, ''आपके लिए थोड़े ही यह बड़ी रक़म है! क्या इतनी-सी छोटी रक़म भी देने में आपको कोई आपत्ति है?''

''भला मुझे क्या आपत्ति हो सकती है? परन्तु जन्म से ही मेरे कुछ विश्वास हैं। दोस्त, रिश्तेदार या भगवान भी क्यों न हो, जब हमें कुछ देते हैं तो उन्हें लौटाना उनका अपमान करना है। हमारे पास जो कुछ है, सब भगवान का ही दिया हुआ है। उनका दिया हुआ धन उन्हीं को लौटा देने से क्या उनका अपमान नहीं होगा? परन्तु धन दान से महान है श्रमदान। मैं और मेरा बड़ा बेटा दोनों हर रोज़ जब तक मंदिर का पुनर्निर्माण नहीं हो जाता, एक घंटे तक श्रमदान करेंगे।''

इस पर सब लोग हँस पड़े। उनकी हँसी सुनकर नारायण का चेहरा फीका पड़ गया। तब गाँव के मुखिया ने कहा, ''दस हज़ार रुपये इकट्ठा करने की हमने एक योजना बनायी है। भगवान के दर्शन के लिए जो-जो आयेंगे, उनसे हम उनके स्तर के मुताबिक चंदा वसूल करेंगे। आप तो सबेरे और शामको भी भगवान के दर्शन के लिए आयेंगे ही।''

यों कहते हुए मुखिया के साथ-साथ सब लोग उठ खड़े हो गये। तब नारायण ने मुखिया के हाथ पकड़ लिये और कहा, ''ज़रा ठहर जाइये।'' फिर वह कमरे के अंदर गया और रुपये लाकर उसे दे दिया।

मुखिया के साथ-साथ बाकी सब ने भी नारायण का अभिनंदन किया। निकलते समय गाँव के पुरोहित ने कहा, ''चंदा तो आपने दे दिया। कृपया उस श्रमदान की बात मत भूलियेगा। इस पर सभी ठठाकर हँस पड़े।

खूंखार, कद्दू की तरह !

यदि तुम तमिलनाडु में नये घर के सामने एक विशाल दानव चेहरा लटकता देखो, तो डरना नहीं। हो सकता है इसके पीछे सिर्फ एक कद्दू हो। इस राज्य के लोग बड़े सफेद कद्दुओं पर डरावने चेहरे रंग देते हैं और कुदृष्टि से बचने के लिए नये घरों के सामने टांग देते हैं।

सफेद कद्दू नयी यात्रा के आरम्भ के अवसर पर नयी मोटर गाड़ियों के सामने तोड़े जाते हैं। यह हरेक अमावास्या और कुछ अन्य अवसरों पर भी नित्यक्रमपूर्वक किया जाता है।

दानव या देव

महाभारत के पात्र कौरव राजकुमार दुर्योधन के चरित्र को तुम कैसे वर्णित करोगे? तुम समझते हो कि वह अपने न्यायोचित विचारवाले चचेरे भाई पांडवों के लिए उन्मादपूर्ण द्वेष रखता था! अतिशय महत्वाकांक्षी? या शत प्रतिशत दुष्ट? पर शायद जमुना की तराई में उत्तर काशी में रहनेवाले एक विशेष समुदाय के लोग तुम्हारे विचार से सहमत न हों। क्यों? क्योंकि वे दुर्योधन को अपने इष्ट देव के समान पूजते हैं।

गोवा की एक लोक-कथा

गोवा, दमन और दीव राज्य भारत के पश्चिमी समुद्र तट पर बसा हुआ है।

प्राकृतिक बन्दरगाह होने के कारण गोवा समुद्र यात्री पुर्तगालियों के लिए मसाला मार्ग पर नियंत्रण रखने की दृष्टि से आदर्श आधार था। गोवा पुर्तगालियों के नियंत्रण में १९६१ तक रहा। तीस मई १९८७ को पूर्ण स्तरीय राज्य घोषित होने के पूर्व यह केन्द्र-शासित राज्य था।

पश्चिमी घाट की सहयाद्रि शृंखला के ढालों पर बसा गोवा उत्तर में महाराष्ट्र, दक्षिण-पूर्व में कर्नाटक और पश्चिम में अरब सागर से घिरा हुआ है।

गोवा की जनसंख्या १३ लाख ४३ हजार ९९८ और उसका क्षेत्रफल ३७०२ वर्ग कि.मी. है। गोवा की राजकीय भाषा कोंकणी है। लेकिन पुर्तगाली, अंग्रेजी तथा मराठी भाषाएँ भी बोली जाती हैं।

गोवा नाम के उद्‌गम के विषय में अनेक मत हैं। ऐसी धारणा है कि पुर्तगालियों ने गोमंतचला, गोपाका पत्तना, गोवापुरी या गोवाराष्ट्र को संक्षिप्त कर दिया। गोमंतचला, जिसका अर्थ है गायों का पर्वत, सम्भवतः गोमती नदी के नाम पर रखा गया, जिसे अब मांडवी कहते हैं और जो राज्य की प्रमुख नदी है।

गीत गाया सिंह ने

बहुत पहले एक व्यापारी था जो *पायेस* (दूर-दूर) के देशों के साथ व्यापार किया करता था। उसके *तीन पूत* (तीन बेटे) थे जो उसके व्यापार की देखभाल करते थे। एक दिन, उसका प्रथम पुत्र रुद्रेश एक जहाज़ माल लेकर व्यापार करने के लिए विदेश यात्रा पर चला गया। शीघ्र ही वह एक सुंदर टापू पर पहुँचा। समुद्र तट पर उसने

एक विचित्र सूचना देखी। सूचना इस प्रकार थी: ''हमारी राजकुमारी, माया, पिछले कुछ महीनों से लापता है। जो व्यक्ति एक सप्ताह के अंदर उसे खोज निकालेगा, वह उससे विवाह कर सकता है। लेकिन चुनौती स्वीकार लेने के बाद यदि वह ऐसा न कर सका तो उसे बंदी बना लिया जायेगा और उसकी जायदाद जब्त कर ली जायेगी।''

रुद्रेश ने अपना भाग्य आजमाना चाहा। ''द्वीप से बाहर वह नहीं गई होगी। यह छोटा द्वीप है। मैं निश्चित रूप से उसे खोज निकालूँगा।'' उसने सोचा।

वह राजा के पास गया और बोला, ''महाराज, मैं एक व्यापारी का बेटा रुद्रेश हूँ। मैं आज ही यहाँ आया हूँ। मैंने बन्दरगाह के निकट एक सूचना देखी। मुझे विश्वास है, मैं आपकी *धुवो* (बेटी) को खोज निकालूँगा। यदि ऐसा नहीं कर सका तो आप माल सहित मेरा जहाज़ जब्त कर लीजिए।''

राजा ने उसे टापू पर स्वतंत्र रूप से घूमने-फिरने की अनुमति दे दी। रुद्रेश ने भिखारी का वेश बनाकर द्वीप का कोना-कोना छान मारा। लेकिन राजकुमारी का कहीं संकेत तक नहीं मिला। तब राज कर्मचारियों ने उसे बन्दी बना लिया और मालसहित उसका जहाज़ जब्त कर लिया गया।

अनेक *माइनो* (महीने) गुजर गये। जब रुद्रेश वापस नहीं लौटा तब व्यापारी को चिन्ता होने लगी। तब उसने दूसरे बेटे नागेश को अपने भाई को खोजने के लिए भेजा। उसने नागेश से कहा, ''रुद्रेश के साथ कुछ अनिष्ट हो गया होगा। मैं
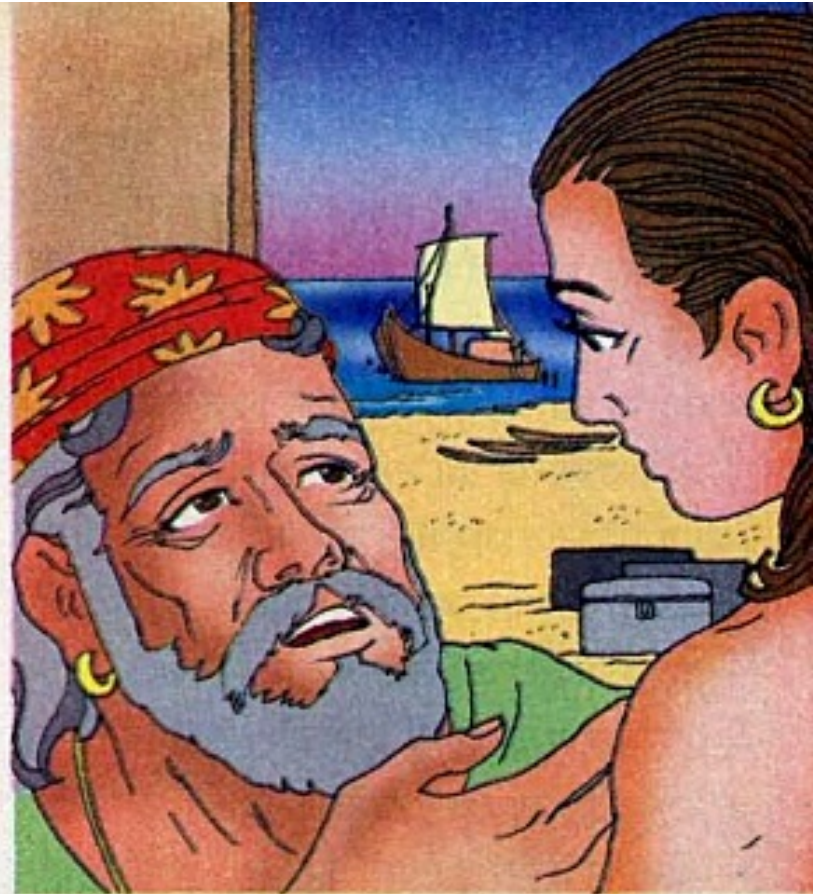
चाहता हूँ कि तुम एक दूसरे जहाज में माल लेकर उसी दिशा में जाओ और व्यापार करने के साथ-साथ अपने भाई का भी पता लगाओ।''

नागेश एक अन्य जहाज लेकर यात्रा पर निकल पड़ा और शीघ्र ही वह उसी द्वीप पर पहुँचा जहाँ

हस्तकला

गोवा की संस्कृति में पुर्तगालिता और भारतीयता का विलक्षण मिश्रण है। वहाँ की हस्तकला यही संस्कृति दर्शाती है।

गोवा की लोकप्रिय शिल्प वस्तुओं में घास के टोप, बाँस की शिल्प-कला, मृदा शिल्प, काष्ठ उत्कीर्णन, शंख शिल्प तथा खोन अथवा बुनी हुई चटाइयाँ हैं। अन्य लोकप्रिय हस्त शिल्पों में पेपियर मैशी, क्रोचेट, कसीदाकारी, बटीक तथा रेग डॉल्स हैं।

उसके भाई ने सूचना देखी थी। इसने भी अपनी किस्मत की परीक्षा लेनी चाही। वह सीधा राजा के पास पहुँचा और राजकुमारी को खोज निकालने की अनुमति माँगी। उसने एक ज्योतिषी का स्वांग बनाया और माया को खोजने निकला। लोगों के भविष्य बताने का बहाना बनाकर वह घर-घर गया परन्तु राजकुमारी का कहीं पता न चला। फलतः उसे भी बन्दीगृह में डाल दिया गया और उसके जहाज़ को जब्त कर लिया गया।

जब व्यापारी के दोनों बेटे बहुत दिनों तक नहीं लौटे, तब वह स्वयं उन्हें खोजने के लिए यात्रा पर जाने की तैयारी करने लगा। उनके सबसे छोटे बेटे मंगेश ने उसे रोका। वह *उग्जियर* (बहादुर) और परिश्रमी था। उसने पिता से कहा, ''बापूई ! आप वृद्ध हो गये हैं और लम्बी यात्रा का तनाव नहीं झेल सकते। इसलिए इस कार्य के लिए मुझे जाने की अनुमति दीजिए।'' व्यापारी सहमत हो गया।

मंगेश भी उसी द्वीप पर पहुँचा और समुद्रतट पर वही सूचना उसने भी पढ़ी। उसे विश्वास हो गया कि उसके दोनों भाई चुनौती के मोह में आ गये होंगे और वे निश्चित रूप से जेल में होंगे। वह नगर में जाकर अपने भाइयों के बारे में पता लगाने लगा। अंत में एक मालिन ने बताया कि उसका चेहरा दो युवकों से मिलता-जुलता है जो पहले राजकुमारी का पता लगाने आये थे और अब जेल में हैं। उनके जहाज भी जब्त कर लिये गये हैं।

''वे दोनों मेरे बड़े *भाऊ* (भाई) हैं।'' मंगेश चिल्ला पड़ा। राहत की सांस लेकर फिर बोला, ''मुझे उन्हें जेल से बाहर निकालने में मदद करनी होगी। और राजकुमारी की खोज कर उससे विवाह भी करना चाहूँगा ! *मत्सो उपकार कोर* (कृपया मेरी मदद करो)। यदि तुम मेरी मदद करो तो तुम्हें इनाम दूँगा।''

''यदि मुझे राजकुमारी का पता मालूम होता तो मैं अपने बेटे को बता देती और राजकुमारी को अपनी बहू बना लेती। राजकुमारी का पता लगाने का एक मात्र उपाय है महल में प्रवेश कर उसकी खोज करना। लेकिन महल में चिड़िया भी नहीं घुस सकती।'' मालिन ने कहा।

"*अवाय* (अम्मा), तुम बहुत बुद्धिमती हो। कृपा करके मदद करो।" मंगेश ने अनुरोध किया।

मालिन ने थोड़ी देर सोचा, फिर उसने अपनी योजना उसे बतायी। मंगेश सुनकर खुशी के मारे उछल पड़ा। वह समझ गया कि यह योजना सफल होगी। *दायो बोरेम कोरुम*!" (धन्यवाद!)

उसने मंगेश को सोने का एक खोखला सिंह बनवाने के लिए सुनार के पास भेजा। जब यह तैयार हो गया तब वह उसे लेकर राजा के पास गई और कहा, "महाराज! यह स्वर्णमय सिंह गा सकता है। मैं इसे आपके लिए गाने कहती हूँ।" फिर वह सिंह की ओर मुड़कर बोली, "हे विलक्षण सिंह! एक गीत सुनाओ।" तुरंत एक सुरीला गाना फूट पड़ा। राजा प्रभावित हो गया। *"म्हाका घेउंक जै!"* (मैं इसे खरीदूँगा)। बोलो इसके लिए कितना धन चाहिए?"

"खेद है, महारज! यह सिंह बेचने के लिए नहीं है। यह एक यात्री का है जो मेरे पास ठहरा हुआ है। वह कल यहाँ से जा रहा है। मैं इसे आपको दिखाने के लिए माँगकर लायी हूँ।" मालिन ने कहा।

"फिर भी इसे एक दिन के लिए महल में छोड़ जाओ। मैं इसे राजकुमार और रानी को दिखाऊँगा। मैं इसका मूल्य दूँगा।" राजा ने कहा। वह सहमत हो गई। और दूसरे दिन इसे वापस लेने के लिए आने को कहकर चली गई।

राजा ने इसे रानी को दिखाया। वह बहुत आनन्दित हुई। "इसे माया को दिखा दीजिए। वह सिंह को गाते हुए सुनकर आनंद से उछल

पड़ेगी।" रानी ने राजा से अनुरोध किया। राजा राजी हो गया।

वह सिंह को लेकर अपने कमरे में गया। फिर उसने कालीन और पट्टी उठाई और सीढ़ी से उतर कर एक विशाल भूगत महल में प्रवेश किया। कई प्रकाशमान कक्षों के अंत में एक जैसी शक्ल सूरत की दस लड़कियाँ थीं। राजा ने उनमें से एक को गले से लगाया। वह उसकी बेटी माया थी।

"पिता जी! सारा दिन यहाँ खेलते मैं तंग आ गई हूँ। और कब तक मुझे यहाँ रहना पड़ेगा?" माया ने राजा से पूछा।

"अब और अधिक दिन तक नहीं, मेरे बच्चे! क्या तुझे मालूम है, तुम्हें यहाँ क्यों रखा गया है? हमारा खजाना खाली है। बाहर से यहाँ आनेवाले व्यापारियों का माल जब्त कर ही मैं इसे भर सकता

हूँ। कृपया कुछ महीने और सहन करो।''

राजा ने फिर उन्हें गीत गाते हुए सिंह को दिखाया। माया और उसकी दासियाँ सिंह को गाते देख रोमांचित हो उठीं। माया ने उसे एक रात के लिए अपने पास रखने की ज़िद की।

तत्पश्चात राजकुमारी सिंह को लेकर अपने कक्ष में विश्राम के लिए चली गई। ''ओ सिंह ! क्या तुम मेरे लिए एक दर्द भरा प्रेम गीत सुना सकते हो?'' माया ने कहा।

सिंहने तुरंत एक दर्द भरा सुरीला प्रेम गीत सुना दिया। ''आह ! काश ! यदि तुम मनुष्य होते तो मैं तुमसे विवाह कर लेती !'' राजकुमारी बोली।

सिंह ने मनुष्य की आवाज में उत्तर दिया, ''मैं एक विचित्र पशु हूँ। यदि तुम मेरे पाँव की जंजीर खींचो तो मैं मनुष्य बन सकता हूँ।''

माया स्तंभित रह गई। उसने जंजीर खींची। शीघ्र ही सिंह के निचले भाग का एक द्वार खुला और मंगेश बाहर आया। उसने अपना परिचय देते हुए कहा, ''मैं तुमसे विवाह करना चाहता हूँ। मैं सिर्फ तुम्हारा हाथ माँगने आया हूँ।''

माया मुग्ध हो गई। वे रात भर योजना बनाते रहे कि अब क्या करना चाहिए। मंगेश को पता चल गया कि राजकुमारी को ऊपरी ओठ के तिल द्वारा अन्य लड़कियों से अलग पहचाना जा सकता है। यह अन्य लड़कियों के चेहरे पर रंगे हुए तिल से अधिक काला और ऊपर था। प्रातःकाल मंगेश सिंह में प्रवेश कर गया। इसे मालिन को पुनः वापस कर दिया गया।

अब मंगेश बड़े आत्म-विश्वासपूर्वक राजा से मिला और बोला, ''महाराज ! मैं एक दूर देश के व्यापारी का पुत्र हूँ। कृपया राजकुमारी को खोज निकालने की मुझे अनुमति दीजिए।''

उसने छः *दिस* (दिवस) द्वीप को देखने में बिता दिया जिससे राजा को यह संदेह न हो कि वह माया का पता-ठिकाना जानता है। सातवें दिन वह राजा के पास आया और उसने राजा से राजकुमारी को महल में खोजने की अनुमति माँगी। राजा अवाक् रह गया। लेकिन वह मना न कर सका।

नृत्य

गोवा के लोक नृत्यों की अनेक शैलियाँ हैं जो यहाँ की संस्कृति और परम्परा का चित्रण करती हैं। *फुदगी* सबसे अधिक लोकप्रिय लोकनृत्य है। इसमें सिर्फ महिलाएँ भाग लेती हैं और इसका प्रदर्शन सभी प्रमुख सामाजिक समारोहों के अवसर पर किया जाता है। एक अन्य लोक नृत्य *धालो* में भी केवल स्त्रियाँ भाग लेती हैं। *कोरेनदिन्हो* पुर्तगाली लोक नृत्य है जो तालयुक्त और उत्कृष्ट पद संचालन के लिए प्रसिद्ध है। *घोदे, मोदनी, गोफ, कुनबी और रोमत* कुछ अन्य लोकप्रिय लोकनृत्य हैं।

मंगेश पूरे महल में गया। फिर वह राजा के कक्ष में जाकर चारों ओर देखने लगा। उसने कालीन और पट्टी उठाई और सीढ़ियों से नीचे भूगत महल में प्रवेश किया। राजा अब घबरा गया। उसे आश्चर्य हो रहा था। वह मंगेश के पीछे-पीछे जा रहा था। मंगेश ने राजकुमारी के कक्ष में पहुँचकर कहा, "महाराज ! इनमें से एक लड़की आपकी बेटी है।"

"यदि तुम उसे पहचानते हो तो कहो कि उनमें से मेरी बेटी कौन है?" राजा हाँफते हुए किसी प्रकार बोल सका। यह लड़का पहले आनेवाले अन्य दावेदारों से अधिक तेज और चुस्त था। मंगेश ने सभी लड़कियों को ध्यान से देखा। उसे याद था कि माया का तिल और लड़कियों के तिल से भिन्न है। उसने राजकुमारी को पहचान लिया और उसके पास जाकर उसका अभिवादन किया। फिर राजा की ओर मुड़कर कहा, "यही आपकी बेटी है।"

चकित राजा मुश्किल से साँस ले सका। "तुम निर्भीक और कुशाग्र-बुद्धि हो। तुम इसके साथ विवाह करने योग्य हो।" राजा ने कहा।

मंगेश रोमांचित हो उठा। उसने राजा से अनुरोध किया, "महाराज, कृपया उन सबको स्वतंत्र कर दें जिन्होंने माया को खोज निकालने की प्रतिज्ञा की थी पर आपके बंदी बना दिये गये।"

राजा ने सहमति दे दी। रुद्रेश और नागेश भी मुक्त कर दिये गये। कहानी सुनकर उन दोनों की खुशी का ठिकाना न रहा। एक ओर मंगेश ने माया का पता कैसे लगाया, इस पर राजा आश्चर्य करता रहा, उधर मंगेश अपनी नवविवाहिता *ओहकल* (दुल्हन) और दोनों भाइयों के साथ अपने घर की ओर रवाना हो गया।

पाक-प्रणाली

गोवा सदा मसालों से जुड़ा रहा है। गोवा की पाक-प्रणाली में मसालों का बहुत महत्व है और यह दोनों दक्षिण और नवाबी पाक-प्रणाली का मिश्रण है।

पुर्तगालियों ने गोवा की परम्परागत पाक प्रणाली में विशिष्ट स्वाद और सुगन्ध जोड़ दी है। समुद्र तटीय राज्य होने के कारण मसालों के साथ मछली तथा अन्य समुद्री खाद्य बहुत लोकप्रिय हैं। फेनी काजू या नारियल से स्थानीय रूप से निर्मित मदिरा है।

समाचार झलक

उत्तरी ध्रुव पर भारतीय महिला

उत्तरी ध्रुव पर कदम रखनेवाली केरल निवासी ४६ वर्षीय श्रीमती रेशल थोमस भारत की पहली महिला आसमानी गोताखोर है। उसने विगत अप्रैल महीने में अपनी यह ऐतिहासिक छलांग एक हजार फुट की ऊँचाई से जब लगाई तब तापमान ५० डिग्री सेलसियस था। जब तक उसे वहाँ से उठाया नहीं गया, वह कच्ची मछलियों और रेंडियर के मांस पर जीवित रही। श्रीमती थॉमस, जिसकी बेटी एनी कभी मिस इंडिया थी, पिछले लगभग २५ वर्षों से आसमानी गोताखोरी कर रही है।

MAHE...

मंदिर के लिए ताला

पुरी के जगन्नाथ मंदिर, जिसकी वार्षिक रथयात्रा जुलाई में निकाली जाती है, के मुख्य फाटक के लिए एक अनोखा नया लाया गया है। यह ताला २ फुट लम्बा और १ फुट चौड़ा है तथा इसका वजन ५० किलो है। इसका निर्माण करनेवाली कम्पनी को इसे बनाने में तीन महीने लगे। इसका मूल्य तीस हजार रुपये है। पीतल की बनी इसकी तीन चाभियाँ हैं। चाभी की लम्बाई ३६ से.मी. (लगभग १५ इंच) है। इसका निर्माण करनेवाली कम्पनी के लिए यह दूसरा सबसे अधिक वजनदार ताला है। यहाँ निर्मित सबसे अधिक भारी ताला ८० किलो का था जो १९६१ में दिल्ली के विश्व व्यापार मेला के लिए बनाया गया था।

विघ्नेश्वर

गणाधिपत्य के पट्टाभिषेक के वास्ते विघ्नेश्वर के लिए पार्वती ने चमकीले रंग-बिरंगे वस्त्र चुने, लेकिन विघ्नेश्वर ने सफ़ेद वस्त्र धारण किया।

इसे देख पार्वती ने पूछा, ''सुनो बेटा, जिस वक़्त अच्छे कपड़े पहनने हैं उस समय तुम शुक्लांबरधर कहलाते हो?''

''अच्छे कपड़े ही धारण किये हैं न, माँ। सफ़ेद रंग उत्तम स्वभाव और विवेक का परिचय देता है !'' विघ्नेश्वर ने कहा।

इसके बाद पट्टाभिषेक हुआ और विघ्नेश्वर गणनाथ बन गये। जयलक्ष्मी नाम धारिणी सिद्धि तथा विद्यावती नाम वाली बुद्धि विघ्नेश्वर को वर कर उनके दोनों ओर खड़ी हो गईं। इस पर गणनाथ सिद्धि-बुद्धि विनायक कहलाये। उसी समय आठों दिशाओं से अष्ट सिद्धियाँ सुंदर कन्याओं के रूप धर कर आ पहुँची और बकुल मालाएँ पहना कर गणेशजी को वर लिया। इस पर विघ्नेश्वर सिद्धि विनायक कहलाये। उनके विवाह का उत्सव वैभवपूर्वक संपन्न हुआ।

विष्णु ने विघ्नेश्वर से कहा, ''आज से यह नई कहावत चल पड़ी कि कोटि विघ्न पड़ने पर भी गणेश की शादी नहीं रुकेगी। हे कल्याण गणेश ! अब आपके हाथों द्वारा विवाह होने हैं। जिनके विवाह होते हैं, उनके जन्म धन्य हो जाते हैं !''

विघ्नेश्वर ने उत्तर दिया, ''हाँ, हाँ ! ऐसा ही होगा। आप कौसल्या के गर्भ से रामचन्द्रजी के रूप में अवतरित होकर रावण का अंत करेंगे।''

इस पर पुनः विष्णु बोले, ''गजानन, आपका

९. प्रभु का अवतरण

प्रसन्न वदन देखने पर हाथी के प्रति ममता पैदा हो रही है!''

''हाँ, आप भी मगरमच्छ की पकड़ से गजेन्द्र की रक्षा करके करिवरद कहलायेंगे न?'' विघ्नेश्वर ने कहा।

इसके उपरांत आठ सिद्धि वनिताएँ विघ्नेश्वर पर चँवर डुलाने लगीं। विघ्नेश्वर सिंहासन पर सिद्धि-बुद्धि आदि के साथ इस तरह शोभायमान थे जैसे तारों के बीच चन्द्रमा सुशोभित होता है। उस वक़्त लक्ष्मी देवी अपना मुँह मोड़कर जाने लगीं, तब विष्णु ने उनको रोककर विघ्नेश्वर से कहा, ''सिद्धि विनायक! यह अफ़वाह फैली हुई है कि लक्ष्मी स्थिर नहीं हैं, चंचल हैं! आप इन्हें अपनी गोद में बैठने दीजिये न? शायद इस प्रकार लक्ष्मी देवी को स्थिरता प्राप्त हो जाये!''

विघ्नेश्वर अत्यंत प्रसन्न होकर बोले, ''माता लक्ष्मीदेवी को अपनी गोद में बिठाने का भाग्य मुझे प्राप्त हो रहा है! मैं धन्य हूँ।'' यों कहकर विघ्नेश्वर ने लक्ष्मी के चरणों में अपनी सूँड़ लपेट कर अपनी दायीं जांघ पर उनको बिठा लिया।

इसे देख विष्णु बोले, ''इस वक़्त विघ्नेश्वर 'लक्ष्मी गणपति' हो गये हैं! माता जिस प्रकार अपने पुत्र का ख्याल रखती है उसी प्रकार जिसको विघ्नेश्वर का अनुग्रह प्राप्त होगा, वहाँ पर लक्ष्मी स्थिर निवास करेंगी।''

उसी समय नारद बोले, ''ओह, विघ्नेश्वर के लिए आखिर कितने नाम हैं! सिद्धि विनायक, लक्ष्मी गणपति, शुक्लांबरधर-और न मालूम कितने नाम हैं!'' यों कहते-कहते वे अपनी महती वीणा झंकृत करते विघ्नेश्वर के शत कोटि सहस्र नामों का स्मरण करते ''जय जय जन गण नायक जय हे,'' गाते सारे लोकों का संचार करने लगे।

एक दिन विघ्नेश्वर चूहे के वाहन पर आकाश मार्ग से यात्रा करते हुए विंध्याचल को पार कर दक्षिण में एक बड़े काले पर्वत पर उतर गये। उस प्रदेश में केले के वन फैले हुए थे। उस पहाड़ की तलहटी में शबर जाति के लोग ढोल व डफलियाँ बजाते उत्सव मना रहे थे।

विघ्नेश्वर एक सुंदर बालक का रूप धरकर उस उत्सव के समीप पहुँचे। शबर लोग उस बालक को घेरकर बोले, ''देवता ने हमारे वास्ते एक सुंदर बालक को भेज दिया है!'' यों कहते उस बालक को उठा ले जाकर शबरों ने उसे उत्सव

के बीच उतारा। वहाँ पर खून की धाराओं से सिंचित एक बड़ी काली शिला थी। उसके सामने एक छोटा-सा गूँगा बालक रो रहा था। उस बालक के बदन पर हल्दी पोत दी गई थी। उसकी कमर में काला वस्त्र लपेटा गया था और उसके कंठ में लाल मंदार माला शोभित थी।

बालक के रूप में स्थित विघ्नेश्वर इसे देख शबरों के नेता से बोले, "मैं तुम्हारे देवता के साथ बातचीत करना चाहता हूँ। तुम लोग मुझे उनके पास ले चलो।"

इस पर शबर नायक खिल-खिलाकर हँस पड़ा और बोला, "हमारे देवता तो घने अंधकार जैसे काले होते हैं और भयंकर लगते हैं, उनको कोई देख नहीं सकता। अगर देखता है, तो डर के मारे खून उगलकर मर जाता है!"

इस पर विघ्नेश्वर हँस पड़े, झट उस वध्य शिला के पास पहुँचकर बोले, "तुम लोग अपने भय की वजह से अपने ही देवता को भयंकर मानते हो! भय को ही तुम लोग भक्ति मान बैठे हो! तुम में से किसी ने भी तुम्हारे देवता को नहीं देखा है! तुम्हारे देवता ने कभी इस तरह के उत्सव और बलि की माँग नहीं की है। तुम्हारे देवता बड़े ही सुंदर हैं!" यों समझाकर बालक विघ्नेश्वर ने अपनी हथेली से उस शिला को थपथपाया। फिर क्या था, काली शिला एक सफ़ेद केले के पौधे जैसे सुंदर देवप्रतिमा में बदल गई। घुटनों पर हाथ फैलाकर बैठी देवमूर्ति हँस मुख होने के कारण अत्यंत मनोहर दिखाई पड़ी। दूसरे ही क्षण विघ्नेश्वर ने उस गूँगे बालक के सर पर हाथ फेरा।

गूँगा बालक अचानक चिल्ला उठा, "स्वामीजी, मैं आपकी शरण में आया हुआ हूँ।" यों वह गूँगा बालक देवता के स्तोत्र पढ़ने लगा।

काली शिला का मूर्ति में बदल जाना और गूँगे का बोलना पल भर के अंदर हो गया। इस चमत्कार को देख शबर लोग डरकर प्रणाम करने लगे।

बालक के रूप में स्थित विघ्नेश्वर ने उनको रोकते हुए कहा, "तुम लोग मुझे प्रणाम मत करो।अपने भय को त्याग कर प्रेम से अपने देवता को प्रणाम करो! तुम लोग जिस देवता को मानते हो, उनको अपने पिता, भाई और मित्र के रूप में मान लो! बलि देना आदि दुष्ट कार्य छोड़कर तुम लोग फल, पुष्प व केले के तोरणों के साथ खुशी से उत्सव मनाओ! यह गूँगा बालक जो अभी-

अभी बोलने लगा है, यही तुम लोगों के गुरु और देवता के पुजारी के रूप में रहेगा ! मैं तुम लोगों के देवता के पास जा रहा हूँ। तुम्हारे देवता तुम लोगों को ज़रूर दर्शन देंगे।'' यों समझाकर विघ्नेश्वर पहाड़ पर चढ गये।
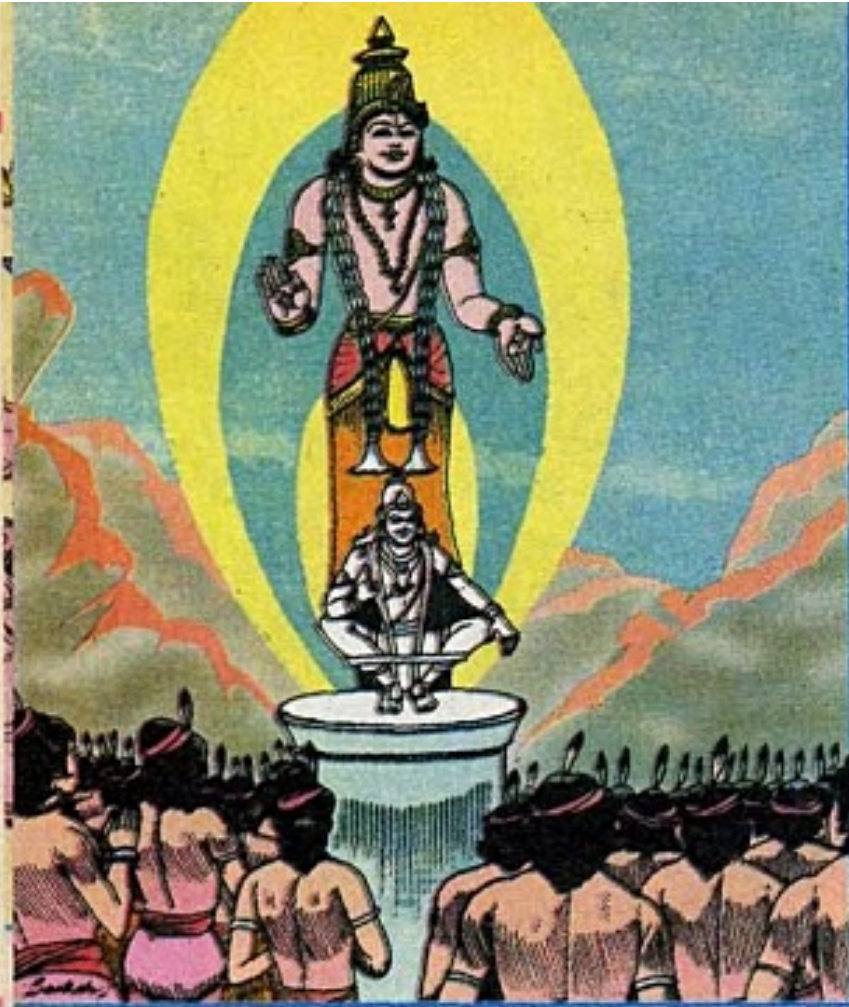
शबरों ने थोड़ी दूर तक उनका अनुसरण किया और बाद में रास्ते में रुक गये।

विघ्नेश्वर बालक के रूप में ही पर्वत की चोटी पर पहुँचे। वहाँ पर भैरव स्वामी अपना सर झुकाये उदास बैठे थे। उनका शरीर काले बादल जैसा था।

विघ्नेश्वर ने दौड़कर अपने हाथों से भैरव के साथ आलिंगन किया। उसी क्षण भैरव का शरीर सफ़ेद चांदनी जैसी कांति के साथ दमक उठा। दिव्य मंगल रूप को धर कर भैरव बालक विघ्नेश्वर से आनंदपूर्वक गले लग कर बोले, ''मैं जानता हूँ कि आप विघ्नेश्वर हैं ! मेरे अवतरण के समय आकाशवाणी ने बताया था कि आपके अनुग्रह से मेरा काला रूप अदृश्य होकर मुझे देवत्व की सिद्धि मिलेगी। इस पहाड़ पर चढ़ने का कोई साहस नहीं करता। मुझे देख डर के मारे पक्षी भी कलरव नहीं करते और न चहक पाते हैं। मैं अपने ही रूप के घृणा करते चिरकाल से आपका इंतजार कर रहा हूँ ! आप अपना वास्तविक रूप दिखाकर मुझे धन्य कीजिए !''

इस पर विघ्नेश्वर अपना निज रूप धर कर बोले, ''आज से आप देवता के रूप में पूजा पाने वाले स्वामी बन गये हैं। आपके भीतर शिव और केशव दोनों हैं। आपका वृत्तांत जब माताजी ने मुझे सुनाया, तब से मैं आप से मिलने को व्यग्र था। मोह तो अंधकार जैसा होता है ! शिव और विष्णु के तेज के मिलन से आपका अवतरण हुआ है। इसी कारण आपको काला रूप प्राप्त हो गया है। आप जैसे दिव्य मंगल सुंदर स्वामी कोई नहीं है ! भक्तिपूर्वक शबर लोग आपकी उपासना करते हैं, इसलिए आप एक बार उन्हें दर्शन दीजिए !''

इसके बाद बालक रूपधारी गणेशजी शबरों के पास लौटकर बोले, ''तुम लोग अपने स्वामी की मूर्ति के सामने घुटने टेक कर एक स्वर में बोलो, ''स्वामी, हम लोग आपकी शरण में आये हैं !'' तब तुम्हारे स्वामी तुम्हें दर्शन देंगे ! जब भी तुम लोग उनको पुकारोगे, तब तब वे तुम्हें जवाब

देंगे ! तुम लोग फ़सल पैदा करो, घर-द्वार बनाकर गाँव बसा लो ! सुखपूर्वक मानवों की तरह ज़िंदगी बिताओ ! तुम्हारे स्वामी की कृपा सदा तुम पर होगी ! अब तुम लोग चले जाओ !'' यों कहकर बालक गणेश अदृश्य हो गये। शबर लोग अचरज में आ गये। उन्हें प्रणाम करके मूर्ति के पास पहुँचे। और भक्तिपूर्वक अपने स्वामी को पुकारा। उन्हें प्रणाम किया, इस पर स्वामी ने दिव्य सुंदर रूप के साथ उन्हें दर्शन दिये। मंदहास के साथ अभय मुद्रा में उन्हें आशीर्वाद देकर वे अंतर्धान हो गये।

उस दिन से लेकर शबर लोग हर साल मार्गशीर्ष मास में केले के तने को और उसके कोमल पत्तों के साथ स्वामी के लिए मण्डप व पण्डाल बनाकर पूजा करने लगे। बलि चढ़ाना बंद करके भक्तिपूर्वक उपासना करने लगे। इसके बाद स्वामीजी जिस पहाड़ पर अवतरित हुए थे उस पर सुंदर शिल्पों के साथ मंदिर बनवाया।

शबरों को पता न था कि बालक के रूप में उनके बीच कौन आये थे ! उन लोगों ने सिर्फ़ यही सोचा कि उनका देवता ही उस रूप में आये और उनका अज्ञान दूर करके उन पर अनुग्रह किया। मगर वे यह नहीं जानते थे कि यह तो विघ्नेश्वर की लीला है ! उनका स्वामी सदा यह सोचते हुए विघ्नेश्वर का हृदयपूर्वक स्मरण किया करते थे। अगर विघ्नेश्वर अपने निज रूप का परिचय शबरों को देते तो वे लोग उन्हीं को देवता मानकर उनकी आराधना करते और अपने स्वामी को बिल्कुल भूल जाते। इसलिए विघ्नेश्वर एक अज्ञात बालक के रूप में ही रह गये।

इस तरह विघ्नेश्वर शबरों में सुधार लाकर

मूषिक वाहन पर आकाश मार्ग में नीचे देखते उत्तर दिशा की ओर यात्रा कर रहे थे। पहाडी तलहटियाँ घने पेड़ों से भरी थीं, पर सारी जमीन उन्हें ऊसर व बंजर दिखाई दी। पानी के होने पर वह जमीन सस्य श्यामल बन जाती। पानी के अभाव को पूरा करनेवाली नदियाँ नहीं थीं, इसलिए सारी पृथ्वी में दरारें पड़ गई थीं ! जनता आसमान की ओर ताकते वर्षा की आशा लिये अपनी ज़िंदगी घसीट रही थी।

साधारण जनता के मुँह से निकले ये शब्द विघ्नेश्वर के कानों में गूँज उठे, "गंगाजी जैसी नदियों के बहनेवाले प्रदेश की जनता कैसी भाग्यवान है ! सारी गंगा हमें भले ही प्राप्त न हो, काश ! उसकी एक शाखा हमें प्राप्त हो जाती ! भगवान हम पर कृपा क्यों नहीं करते? कहा जाता है कि तीन करोड़ देवता हैं, पर किसलिए? हम पर किसी की कृपा नहीं है !"

उधर पश्चिमी दिशा में ऊँची पर्वत-श्रेणियाँ, इधर पूरब की दिशा में छोटी-छोटी पहाड़ियों से शोभित पृथ्वी पूर्वी सागर तक फैली हुई थी। असंख्य लोग जानवरों तथा पक्षियों का शिकार करके जंगली जीवन बिता रहे थे ! जो लोग खेती पर निर्भर थे, वे भी यातनाएँ भोग रहे थे ! उन्हें समुद्र पर प्राणों का मोह छोड़कर मछलियाँ पकड़ने वाले मछुए अधिक संख्या में दिखाई दिये।

उत्तर देश की भूमि की तुलना करके विघ्नेश्वर दुखी हुए। हिमालय की तराइयों में सर्वत्र सुंदर जल-प्रपात, रमणीय सरोवर, तथा नदी-नद से प्रकृति अत्यंत शोभायमान है। इधर पश्चिमी पहाड़ियाँ दीठ के खिलौने जैसे फीकी लग रही हैं !

उस पर्वत श्रेणी के बीच सह्याद्रि के समीप की घाटी में गौतम का आश्रम इस तरह शोभायमान था जैसे कोयलों के बीच मरकत द्युतिमान हो ! विघ्नेश्वर ने इस तरह शिर चालन किया, मानो उनके मन में कोई विचार सूझ गया हो ! चूहे की गति बढ़ाने की चेतावनी दे वे दक्षिण तथा विन्ध्याचल को पार करके उत्तरी दिशा में पहुँचे। उत्तर की भूमि दूर से कोई नई भूमि जैसी उन्हें प्रतीत हुई।
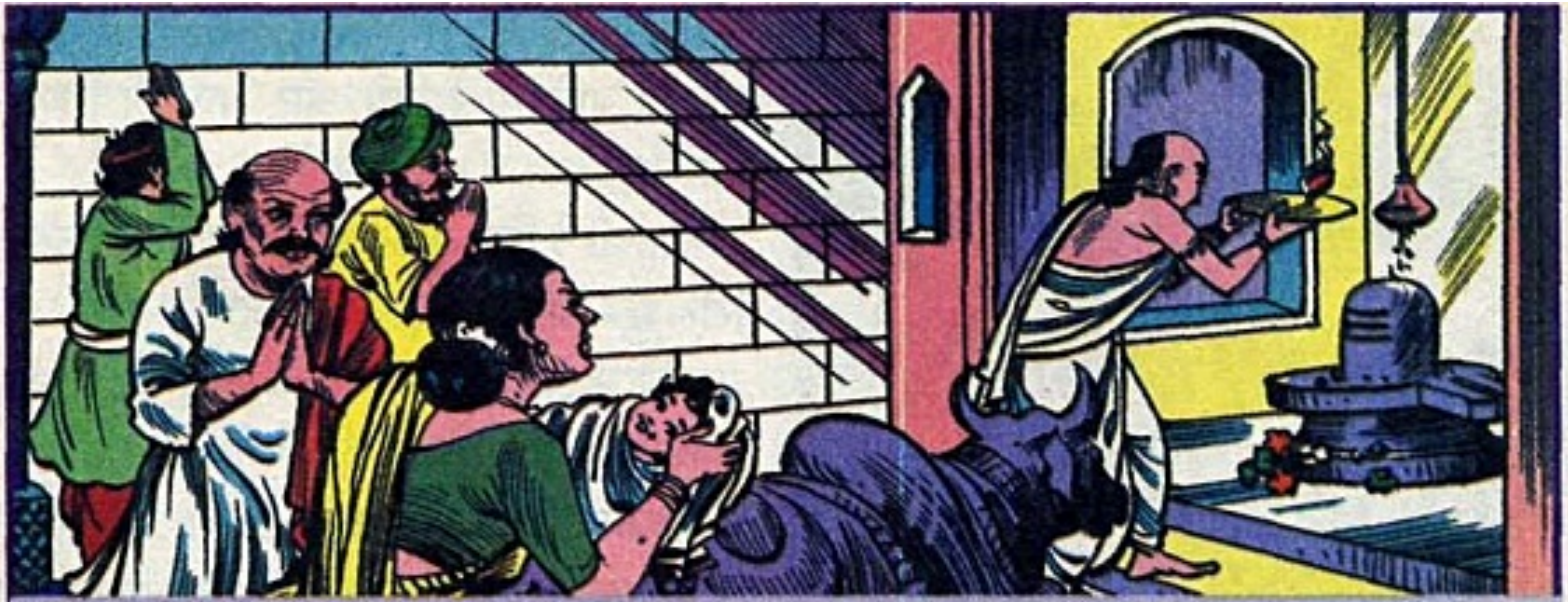
योग्य जोड़ी

बहुत पहले की बात है। सराहपुर में गोरख नामक एक किसान रहा करता था। उसका एक ही बेटा था। जब वह बालिग हुआ, तब उसने उसकी शादी भी कर दी। डेढ़ साल के अंदर उसका एक सुंदर पोता भी हुआ। गोरख दंपति बहुत खुश हुए।

जब पोता एक महीने का था तब उनका बेटा और बहू चौड़े पेन्देवाले तख्तों की नाव पर बैठकर नदी पार कर रहे थे। नाव उलट गयी और दोनों नदी में डूबकर मर गये।

इस दुर्घटना से गोरख दंपति बहुत दुखी हुए। अब उन्हें जीना भी व्यर्थ लगने लगा। उन्होंने खाना-पीना छोड़ दिया। पड़ोसियों ने उन्हें समझाया, ''जो हो गया, सो हो गया। उसी को लेकर रोते रहने से कोई फायदा नहीं। कम से कम पोते के लिए ही सही, तुम दोनों को जीना है। उसकी जिन्दगी को संवारना तुम दोनों का फर्ज है। अब वे दोनों संभल गये। उन्हें लगा कि पड़ोसी ठीक कह रहे हैं। कुछ दिनों के बाद वे अपने पोते को नील कंठ मंदिर ले गये। पुजारी गंगाधर शास्त्री के सुझाव के अनुसार उन्होंने उसका नाम रखा शिव। भगवान से उन्होंने प्रार्थना की कि वह बड़ा बने और नाम कमाये।

अब शिव बालिग़ हो गया। उसकी सुंदरता व अक़्लमंदी की सब प्रशंसा करते थे। वृद्ध पुजारी गंगाधर शास्त्री उसे बहुत चाहते थे। वह अपने दादा के साथ लगभग हर रोज़ मंदिर आता था। उससे बातें किये बिना शास्त्री को चैन नहीं आता था।

एक दिन शाम को दादा और पोता दोनों मंदिर आये। भगवान के दर्शन कर लेने के बाद वे गंगाधर शास्त्री से मिले, जो मंडप में विश्राम कर रहे थे।

- लक्ष्मी गायत्री -

और शादी करने से इनकार कर रहा है। अब उसकी बातें भी सुनिये और आप ही निर्णय कीजिए कि क्या यह सही है?''

शास्त्री ने शिव की तरफ़ मुड़कर देखा। उसने सिर झुकाकर कहा, ''दादाजी ने कोई एक लड़की दिखा दी और ज़ोर दे रहे हैं कि उससे शादी कर लो। अगर कोई लड़की देखने में सुंदर हो तो उसे काम-काज नहीं आता। अगर सुंदर, अक़्लमंद व काम-काज जाननेवाली लड़की मिल जाए तो वह अवश्य ही घमंडी होगी। ऐसी लड़की से शादी कर लूँ तो वह दादा और दादी की ठीक तरह से देखभाल नहीं करेगी। इस उम्र में मैं नहीं चाहता कि वे कष्ट झेलें। मेरी इन्हीं बातों पर दादाजी नाराज़ हो उठे।''

शास्त्री ने उन्हें सादर बिठाया और पूछा, ''शिव, आजकल तुम्हारे दादा चिंतित लगते हैं। उनके चेहरे पर उदासी दिखती है। छोटी-सी भी बात पर भड़क जाते हैं। कारण क्या है?''

इस पर शिव ने मुस्कुराते हुए कहा, ''दादा मुझसे नाराज़ हैं।''

''क्या कहा तुमने? तुम्हारे दादा तुम पर नाराज़ हैं? भला ऐसा कैसे हो सकता है?'' आश्चर्य-भरे स्वर में शास्त्री ने कहा। तब गोरख ने हस्तक्षेप करते हुए कहा, ''यह नाराजगी है या चिंता। आप ही इसका निर्णय कीजिए शास्त्रीजी। मैं इससे शादी करने को कहता हूँ, पर यह मानता ही नहीं। आज मैंने इसे खूब डाँटा भी। पर बैसिर पैर का बहाना बना रहा है

शिव की बातों से सहमत शास्त्री ने कहा, ''तुम्हारा पोता तो ठीक ही कह रहा है। उसके विचार से मैं सहमत हूँ।''

गोरख इसका जवाब देने ही वाला था कि इतने में उसी गाँव का किसान चाँद वहाँ आया। उसके साथ-साथ एक सुंदर लड़की भी आयी थी। चाँद ने शास्त्री को प्रणाम किया और कटहल का एक फल उन्हें दिया।

शास्त्री ने उसे धन्यवाद दिया और पूछा, ''यह लड़की कौन है?'' ''मेरी साली की बेटी है। नाम इसका गौरी है। शहर में रहती है। पर सब काम जानती है। जिस काम को करने में मेरी पत्नी एक घंटा लगाती है, उसे यह पंद्रह मिनटों में पूरा कर लेती है।'' चाँद ने कहा।

इतने में गौरी दो क़दम आगे आयी और विनयपूर्वक शास्त्री को प्रणाम किया।

"शीघ्रमेव कल्याणमस्तु !" कहते हुए शास्त्री ने उसे आशीर्वाद दिया। साथ ही उसने शिव का वह चेहरा भी देखा, जिसमें दिखायी दे रहा था कि वह मन ही मन गौरी पर मुग्ध है।

फिर उन्होंने चाँद से कहा, "तुम्हारे कहे अनुसार यह लड़की चुस्त है और अक़्लमंद भी। तुम तो जानते ही हो कि यह शिव सुंदर भी है और होशियार भी। अब यह जानने की मेरी बड़ी उत्कंठा है कि इन दोनों में कौन अधिक समर्थ है। गौरी को कोई एतराज तो नहीं है न?"

गौरी ने सिर हिला दिया, मानों उसे कोई एतराज नहीं है। यह जानते ही शास्त्री ने शिव से कहा, "जो भी गौरी से पूछना है, पूछ डालो।"

तब बड़े ही उत्साह-भरे स्वर में शिव ने पतली व सुंदर गौरी से पूछा, "तुम्हारे घर के सभी दरवाज़े छोटे ही हैं या बड़े भी हैं?"

उसके इस प्रश्न पर शास्त्री मुस्कुरा पड़े, पर गोरख व चाँद सोचने लगे कि यह भी कोई प्रश्न हुआ?

गौरी हृष्ट-पुष्ट शिव को एकटक देखती रही और कहा, "हमारा परिवार किसानों का परिवार है। हम मेहनत करनेवाले लोग हैं। साधारणतया घरों के दरवाज़े तो छोटे ही होते हैं। हमारा घर तो तुम्हारे घर से छोटा ही है।"

बचपन से ही शिव के दादा ने उसे लाड-प्यार से पाला था। खूब खिलाया-पिलाया

भी था। गौरी के इस उत्तर पर वह चिढ़ता हुआ बोला, "ठीक है, ठीक है, पर यह बताना कि पानी से भरा गागर तुम्हें सवेरे-सवेरे दिया जाए तो शाम तक वह खाली हो जायेगा या भरा ही रहेगा।"

शिव की समझ में आ गया कि वह किफ़ायती है और किसी भी वस्तु के मूल्य को जानती है। इस पर वह खुश होता हुआ बोला, "हाँ, हाँ समझ गया। पर यह तो बताना कि बूढ़े व निकम्मे बैल का क्या करें?"

"हर प्राणी को कभी न कभी बूढ़ा होना ही पड़ता है। पर हमें यह याद रखना चाहिए कि उसने अपनी जवानी में हमारी कितनी सेवाएँ कीं। हमेशा की तरह हमें उसका पालन-पोषण

करना चाहिए।'' गौरी ने कहा।

उसके इस जवाब को सुनकर शिव में विश्वास पैदा हो गया कि अगर इस कन्या से मैं विवाह करूँगा तो अवश्य ही यह मेरे दादा-दादी की अच्छी देखभाल करेगी।

फिर भी वह चुप नहीं रहा। उसने फिर से सवाल किया, ''ठीक है। एक के साथ एक जोड़ना है या उससे ज्यादा जोड़ना है? या कुछ जोड़ना है? या कुछ जोड़ने की ज़रूरत ही नहीं?''

उसके इस प्रश्न पर थोड़ा नाराज़ होती हुई गौरी बोली, ''अगर वह एक बड़ा हो तो कुछ भी जोड़ने की ज़रूरत नहीं। अगर वह अपने भगवान का हो तो उस एक के साथ दस भी जोड़ सकते हैं।''

गंगाधर शास्त्री अब तक मौन रहकर बड़े ही चाव से उनका संवाद सुन रहे थे। इस जवाब पर वे ठठाकर हँस पड़े। पर यह जवाब सुनकर शिव के चेहरे पर गंभीरता छा गयी।

गोरख व चांद की समझ में कुछ भी नहीं आया। वे शास्त्री को देखते रह गये।

गंगाधर शास्त्री ने तब उनसे कहा, ''शिव के अंतिम प्रश्न और गौरी के अंतिम उत्तर के अलावा बाकी उत्तर तुम दोनों की समझ में आ गये होंगे। अब रहा अंतिम प्रश्न का उत्तर, जो यों है। शिव का प्रश्न था कि अगर कोई एक बात करे तो जवाब में क्या वह दस बातें कहेगी?

इस पर गौरी थोड़ा-सा नाराज़ हो उठी और बोली, ''परिवार में कोई बड़ा आदमी कोई एक अप्रिय बात भी करे, तो चुप रह जाना चाहिए। पर पति ने ऐसी अप्रिय बात कही तो एक का जवाब दस हो सकते हैं। तद्वारा गौरी ने साबित कर दिया कि पति और पत्नी के बीच में होनेवाले झगड़े सहज हैं। अच्छा इसी में है कि दोनों एक दूसरे का आदर करें। निस्सन्देह इनकी जोड़ी सुयोग्य और सक्षम है। शुभमस्तु! शीघ्रमे विवाह प्राप्तिरस्तु,'' कहते हुए उन्होंने गौरी व शिव को आशीर्वाद दिया।

शिव और गौरी ने एक दूसरे को देखा और फिर दोनों ने मिलकर शास्त्री के चरण छूकर प्रणाम किया।

घर का चोर

दुपहर का समय था। कमला के पति माधव ने भोजन कर लिया और किसी अत्यावश्यक काम पर बाहर चला गया। रसोई-घर के पास ही एक और कमरा था, जहाँ कमला सोने चली गयी। उसने किसी चीज़ के हिलने-डुलने की आवाज़ सुनी तो उसने उधर झांककर देखा। वहाँ का दृश्य देखकर वह अवाक् रह गयी। कमला की ननद का पति शरत उसकी पेटी खोल रहा था।

फिर भी कमला चुप रह गयी। वह देखती रही कि शरत ने पेटी पूरी खोल दी और रेशमी साड़ियों के नीचे छिपाये गये दस तोलों के सोने के गहने को निकाला और वहाँ से चलता बना। कमला स्तंभित होकर देखती रह गयी।

लक्ष्मी कमला के पति की दीदी थी। दीदी के सिवा उसका अपना कोई सगा नहीं था। लक्ष्मी का पति शरत कचहरी में काम करता था। वह स्वभाव से अच्छा और शांत स्वभाव का था।

कमला शरत के बारे में अपने ही आप कहने लगी, ''भाई शरत तो अच्छा आदमी है। उसमें बुरी नीयत रत्ती भर भी नहीं है। पर उसने ऐसा क्यों किया? जानना ही पड़ेगा कि ऐसा काम उसने क्यों किया?

कमला ने इस बात को बिल्कुल पोशीदा रखा। यह प्रकट होने नहीं दिया कि घर में ऐसी घटना घटी। पति जब शाम को घर लौटा तब उसने किसी बहाने की आड़ में पति की आँखों के सामने ही पेटी खोली। फिर चिल्लाने लगी कि उसके गहने की चोरी हो गयी, मानों उसे इस बात का पता अभी-अभी चला हो।

कमला की चिल्लाहट सुनकर घर के सब लोग वहाँ इकट्ठे हो गये। सब लोग यहाँ-वहाँ ढूँढ़ने

- लक्ष्मी गायत्री -

लगे। कमला ने भी घबराहट का नाटक करते हुए कहा, "जब कभी भी ऐसी समस्या का सामना करना पड़ता है, तब इसका पूरा भार भगवान पर छोड़ देती हूँ। इस बार भी ऐसा ही करूँगी। अलावा इसके, कोई दूसरा उपाय सूझता ही नहीं।" कहती हुई वह घर के छोटे-से मंदिर में पास गयी और आँखें बंद करके प्रार्थना करने लगी।

इस घटना के दसवें दिन किसी ने घर का दरवाज़ा खटखटाया। कमला के पति माधव ने दरवाज़ा खोला तो देखा कि सामने एक वृद्ध साधु खड़े हैं। साधु ने कहा, "मुझे अंदर आने दोगे या जो कहना है, यहीं बताकर निकल जाऊँ। बोलो माधव।"

माधव सोच ही रहा था कि क्या जवाब दूँ कि शरत वहाँ आ गया और साधु को प्रणाम करके अंदर ले गया।

अंदर आनेके बाद साधु ने शरत को ग़ौर से देखा। फिर वहाँ आयी कमला को देखकर हँसते हुए कहा, "कैसी हो बिटिया, भगवान की प्रेरणा से मुझे आज तुम्हारे घर आना पड़ा। तुम्हारे मायकेवालों ने जो गहना दिया था, वह अचानक ग़ायब हो गया है न?"

कमला ने "हाँ" के भाव में सिर हिलाया। तब साधु ने उसे आश्वासन देते हुए कहा, "चिंता की कोई बात नहीं। जो गहना ग़ायब हो गया है, वह एक-दो दिनों में तुम्हें मिल जायेगा। मैं तरसों सबेरे यहाँ आऊँगा। मुझे यहाँ एक ज़रूरी काम है। उसे पूरा करके ही रहूँगा।" फिर शरत की ओर मुड़ते हुए साधु ने कहा, "बेटे, मेरे साथ चलने का कष्ट करोगे?"

साधु की बातें सुनकर पहले ही से घबराये हुए शरत ने सकपकाते हुए 'हाँ' कर दिया। वह साधु के पीछे-पीछे बाहर आया। आधे घंटे के बाद जब शरत लौट आया तब उसके चेहरे पर शांति व्याप्त थी। दो दिनों से जो विवर्णता व पीलापन उसके चेहरे पर स्पष्ट झलक रहे थे, वे अब नहीं थे। वह प्रशांत व्यक्ति लग रहा था।

उसी दिन शामको जब कमला ने साड़ी लेने के लिए पेटी खोली तो उसे उसका गहना दिखायी पड़ा। वह बेहद खुश होकर चिल्ला पड़ी "गहना मिल गया"।

फिर से घर के लोग इकट्ठे हो गये और इस बात पर खुश हो गये कि गहना मिल गया। तीसरे दिन जब वही साधु घर आया तो उसका भव्य स्वागत हुआ। साधु पद्मासन लगाकर चटाई पर बैठ गये और कहने लगे "आप सब लोग अच्छी तरह से याद रखें कि परिवार का सुख, अच्छाई-बुराई, सौभाग्य सब बहू पर ही निर्भर होते हैं। कोई प्रश्न करे, अपना संदेह व्यक्त करे, इसके पहले ही साधु वहाँ से उठकर चले गये।

माधव ने उस रात को कमला से कहा, "उस साधु में देवांश है।" यों साधु को याद करते हुए उसने हाथ जोड़े।

कमला ने मुस्कुराते हुए कहा, "जब से शादी हुई है, भाभी असंतृप्त लगती हैं। उस असंतृप्ति ने ही भैया शरत को चोरी करने पर मजबूर किया। वे साधु कोई और नहीं, मेरे मामा विश्वनाथ हैं। उन्हीं की सहायता से मैंने यह योजना बनायी।" वह और कुछ बताने ही जा रही थी कि इसकी बात को काटते हुए माधव ने कहा, "तुमने तो कमाल कर दिया। जब-जब मैं तुम्हारे गाँव आया था, तब-तब मैंने तुम्हारे मामा को देखा। पर साधु के वेष में मैं उन्हें पहचान ही नहीं सका।"

"वे पौराणिक नाटकों में अभिनय किया करते थे। क्या आप जानते हैं, शरत को बाहर ले जाकर उन्होंने क्या किया? उन्होंने उनसे कहा, 'मुझे मालूम है कि तुम्हीं ने उस गहने की चोरी की। तुमने ऐसा बुरा काम क्यों किया?' तब शरत भैया रो पड़े और उनसे बताया कि भाभी उन्हें तंग कर रही थीं। उनकी अकर्मण्यता पर ताने कस रही थीं। इसीलिए उन्हें चोरी करनी पड़ी। उन्होंने साधु मामा को आश्वासन दिया कि आगे ऐसा नहीं होगा और भाभी को वे अपने काबू में रखेंगे। फिर भैया शरत ने वह गहना चुपचाप मेरी पेटी में रख दिया।"

कमला को बड़े ही प्यार के साथ देखते हुए माधव ने कहा, "घर की इज़्ज़त बचे, घर के दामाद की बदनामी न हो, इसके लिए तुमने बड़ी अच्छी योजना बनायी। वह बहू सचमुच ही धन्य है, जो ससुराल की इज़्ज़त को सदैव बचाती है। उससे बढ़कर सुंदर गहना हो ही नहीं सकता।"
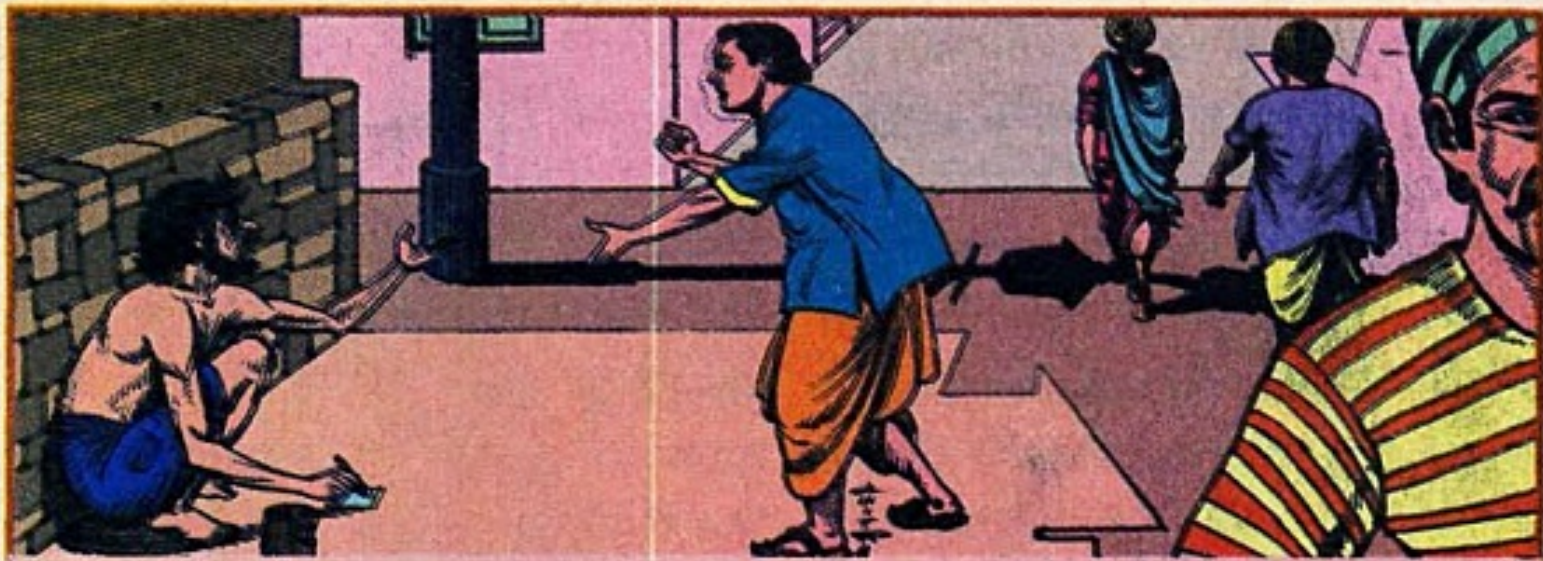
कुशाग्र बुद्धि

एक नगर में एक राजा था। वह प्रतिवर्ष एक विशेष सभा बुलाता और उसमें कुशाग्र बुद्धि वाले युवकों को निमंत्रण देता।

राज्य का प्रधान मंत्री उन युवकों के साथ चर्चा करता और उनमें से चतुर एवं कुशाग्रबुद्धि वाले युवकों को अपने दरबार में नियुक्त करता था।

एक बार राजदरबार की गोष्ठी में गणपति नामक युवक ने अपनी अनोखी कुशाग्र बुद्धि का परिचय दिया।

प्रधान मंत्री ने उन युवकों से पूछा, ''क्या तुम में से किसी ने हाथवाले लूले को देखा है?''

इसका उत्तर गणपति ने यों दिया, ''मैं यहाँ आ रहा था। रास्ते में एक भिखारी कागज़ और क़लम हाथ में लिए बैठा हुआ था। उसने मुझसे पूछा, 'हुज़ूर, दान दीजिए!' मैंने थोड़े पैसे उसे दे दिये। झट उसने कागज़ पर लिख दिया, ''दो।' मैंने पूछा, ''तुम क्या लिख रहे हो?'' भिखारी ने जवाब दिया, ''हाथों के होते जो लूले नहीं, उनकी गिनती कर रहा हूँ!'' उसका आशय था कि जो दान नहीं देते, वे हाथों के रहते हुए भी लूले हैं।''

''ऐसे ही आँखों के होते हुए भी अंधे हो सकते हैं न?'' मंत्री ने कहा।

गणपति ने यों उत्तर दिया, ''जी हाँ! एक बार मैं एक शहर में गया। वहाँ के एक घर पर ताला लगा था, मगर भीतर कोई आहट हो रही थी। मैंने चिल्लाकर पूछा, ''भीतर कौन है?'' लेकिन अंदर से कोई जवाब न आया। मैंने तुरंत अड़ोस-पड़ोस वालों को इकट्ठा किया। एक चोर भागने की कोशिश में था। सब ने मिलकर उसे पकड़ लिया।

चन्दामामा में २५ वर्ष पहले प्रकाशित कथा

उस चोर ने मेरी ओर देखकर कहा, ''तुम जैसे आँखों के होते अंधे न बननेवाले कम लोग होते हैं। इसलिए मेरा पेशा आज तक चलता रहा।'' इसलिए हमें समझना चाहिए कि घर पर ताला लगे देखकर भी भीतर की आहट पर ध्यान न देकर चले जानेवाले आँखों के होते हुए भी अंधे हैं।''

''जीभ के होते हुए भी मूक आदमी कौन हो सकते हैं?'' मंत्री ने पूछा।

गणपति ने कहा, ''एक बार मुझे एक अमीर के यहाँ कर्ज लेना पड़ा। जब ब्याज की बात उठी तब उसने मुझ से कहा, 'जीभ के रहते हुए भी जो मूक हैं, उन्हें प्रति रुपया एक महीने के लिए चार आने ब्याज पर कर्ज देता हूँ, ऐसे जो नहीं होते, उनसे ब्याज वसूल नहीं करता।' मैंने इसका अर्थ पूछा। उसने बताया कि जो लोग उधार लेकर मियाद तक कर्ज के रुपये न देकर झूठ-मूठ के बहाने बताते हैं और जो लोग झूठ बताकर कर्ज माँगते हैं, वे जीभ के होते हुए भी मूक होते हैं।''

मंत्री ने एक और सवाल पूछा, ''बिना कहे जानेवाली और बिना कहे आनेवाली चीज़ मौत के अलावा कोई और है?''

गणपति ने कहा, ''जवानी बिना कहे चली जाती है, इसलिए सावधान रहना चाहिए। इसी प्रकार भाग्य पर भरोसा रखकर हमें बरबाद नहीं होना है। ये बातें मेरे दादा मुझसे बराबर कहा करते थे।''

''क्या अनेक बार मरनेवाले भी होते हैं?'' मंत्री ने पूछा।

इसका जवाब भी गणपति ने ही दिया, ''इस नगर में मैंने रोनेवाली एक औरत को देखा। मैंने उससे पूछा, ''बहन, रोती क्यों हो?'' उसने जवाब दिया, ''मेरी ज़िन्दगी रोने-धोने में ही बीतती जा रही है। मेरा वीर पुत्र दो साल पहले एक ही बार मर गया है। मगर मेरा पति क़ायर है जो दिन में दस बार मरता है।''

इस पर मंत्री ने राजा को सलाह दी कि गणपति को दरबार में नौकरी दी जा सकती है। राजा ने उसे नौकरी दे दी।

चन्दामामा प्रस्तुति

अपराजेय गरुड़

19

चित्र : पाणि
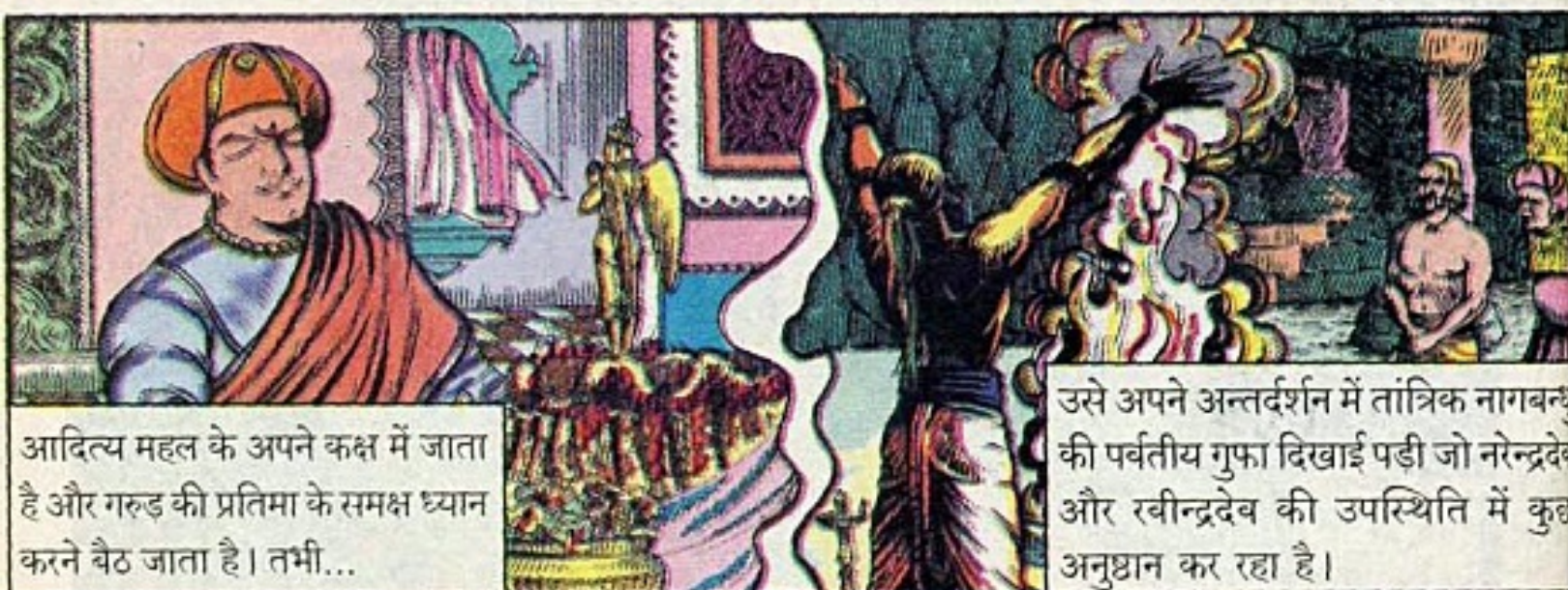
महल के बाहर ढोलों और तुरहियों की आवाज से आदित्य का ध्यान टूट जाता है और राजा के सन्निकट आगमन को भाँप जाता है।
आदित्य महल के प्रवेश द्वार की ओर शीघ्रतापूर्वक जाता है।
अरुणा, पहले तुम चली जाओ।
रथ ठीक मेरे पीछे है, महानुभाव।

एक आनन्द विभोर जन समूह राजा को सुनने की प्रतीक्षा कर रहा है।
मैं नरेन्द्रदेव और रवीन्द्रदेव को राजद्रोही घोषित करता हूँ। बे चन्द्रपुरी से भाग गये हैं। उन्हें जीवित या मृत यहाँ अवश्य लाया जाना चाहिए।
तांत्रिक की गुफा में आप्त पुरुष आश्वासन देता है।
भय की कोई बात नहीं है। तुम यहाँ बिलकुल सुरक्षित हो युवराज ! यह स्थान चारों ओर पहरेदारों से घिरा है।

...और महानुभाव! राजर्षि पाशंकर की आत्मा का आवाहन करने के लिए विशेष अनुष्ठान कर रहा है।
...और वह आदित्य को अपने वश में कर लेगा।
तांत्रिक के सामने के अग्निकुण्ड से उठते हुए धुएँ में से निकलती हुई विचित्र आकृति की भयानक आवाज आप्त पुरुष का हस्तक्षेप करती है।

हे बन्धु पाशंकर ! यह हम सब के प्रभु और स्वामी के प्रति हमारा कर्त्तव्य है कि हम उस अंकुर को उखाड़ फेंक दें जिसे हमारे शत्रु का आशीर्वाद प्राप्त है।
वह चन्द्रपुरी में रहता है। अगली पूर्णिमा से पहले उसे मेरे पास ले आओ। केवल तभी मैं अपना यज्ञ पूरा कर सकता हूँ।

उसे सम्मोहित कर दो। इसके पहले कि वह तुम्हें नष्ट कर दे, तुम पंख को नष्ट कर दो।
गुरुदेव ! मैं करूँगा। किन्तु पहले उसके अधिकार में रखे पंख तक मुझे पहुँचना होगा।
मैं बल्कि युवक को ही समाप्त कर दूँगा।

मण्डी रवीन्द्रदेव अपने को भाल नहीं पा रहा है।
एक साधारण व्यक्ति के लिए अपनी शक्ति क्यों बर्बाद करेंगे? मुझे आदेश दीजिए और मैं आदित्य को क्षण भर में आपके हवाले कर दूँगा।
तांत्रिक को रवीन्द्रदेव ढीठ प्रतीत होता है।
अपने स्वामी भक्त लोगों को एकत्र करो और जैसे ही पाशंकर आदित्य पर जादू डालेगा, राजा की सेना पर टूट पड़ने के लिए तैयार रहो।

तांत्रिक अपनी गुफा में जाने से पहले आप्त पुरुष से बात करता है।
युवराज को चेतावनी दे दो कि वह अपने को वास्तविक शक्ति से अधिक न कूते, नहीं तो खतरे में पड़ जायेगा।
चन्द्रपुरी में ...
हाँ, आदित्य ! अब अगला कदम क्या होगा?

आदित्य साथियों को विवरण दे रहा है।
हमें दोनों राजद्रोहियों को पकड़ना होगा। लगता है वे पड़ोसी सर्पदेश की गुफाओं में छिपे हुए हैं। और उन्हें स्थानीय वनजाति के नेता की सुरक्षा प्राप्त है।
राजा चकित है।
आह ! सर्पदेश? जहाँ दुष्ट तांत्रिक ने वन जातियों को अपने वश में कर रखा है।

यह एक खतरनाक अभियान होगा !
लेकिन दुष्ट शक्तियों को पनपने देना और अधिक खतरनाक होगा। आपके आशीर्वाद से, महाराज !...
हम लोग तांत्रिक को खामोश कर देंगे और नरेन्द्रदेव तथा रवीन्द्रदेव को पुनः बचकर निकलने नहीं देंगे। हमारे आदमी सभी निकास बिन्दुओं पर पहरा देंगे।

(क्रमशः)

'हीरोज़ ऑफ इंडिया' प्रश्नोत्तरी में अपनी प्रविष्टि भेजें और आश्चर्यजनक पुरस्कार जीतें।

भारत के नायक-१२

यहाँ राष्ट्रीय आन्दोलन के कुछ नेताओं का उल्लेख है। क्या तुम उन्हें जानते हो?

तीन सर्वशुद्ध प्रविष्टियों पर पुरस्कार में साइकिलें दी जायेंगी।

मैंने कांग्रेस कार्यकर्त्ताओं को सलाह दी कि वे ब्रिटिश सरकार की नौकरियाँ छोड़ दें। मुझे शेरे-पंजाब के नाम से लोग जानने लगे। मैं कौन हूँ?

मैं तमिल भाषा का क्रांतिकारी कवि हूँ। मेरे गीत और कविताओं ने भारत माता को शक्ति के रूप में महिमामंडित किया है। मेरा नाम क्या है?

मैंने एक मराठी दैनिक 'केसरी' का सम्पादन किया। मुझे ब्रिटिश सरकार द्वारा बर्मा के मांडले जेल में ६ वर्षों के लिए देश निकाला की सजा दी गई। क्या तुम मुझे जानते हो?

मैंने हिन्दुस्तान सोशलिस्ट रिपबलिकन आर्मी का संगठन किया। मुझे १९३१ में कामरेड राजगुरु और सुखदेव के साथ फाँसी की सजा दी गई। मैं कौन हूँ?

मैंने सत्याग्रह का प्रयोग राजनीतिक आयुध के रूप में किया। यह मुफ्त मिल गया, है न? मैं कौन हूँ?

प्रत्येक प्रश्न के नीचे दिये गये स्थान को स्पष्ट अक्षरों में भरें। इन पाँचों में से आपका प्रिय आदर्श नायक कौन है? और क्यों? दस शब्दों में पूरा करें

मेरा प्रिय राष्ट्रीय नायक...है, क्योंकि

....

प्रतियोगी का नाम: ....

उम्र: .... कक्षा: ....

पूरा पता: ....

....

पिन: .... फोन: ....

प्रतियोगी के हस्ताक्षर: ....

अभिभावक के हस्ताक्षर:..

इस पृष्ठ को काटकर निम्नलिखित पते पर ५ अक्तूबर से पूर्व भेज दें-

हीरोज़ ऑफ इंडिया प्रश्नोत्तरी-१२
चन्दामामा इन्डिया लि.
नं.८२, डिफेंस ऑफिसर्स कॉलोनी
ईक्काडुथांगल, चेन्नई-६०० ०९७.

निर्देश :-

१. यह प्रतियोगिता ८ से १४ वर्ष की आयु तक के बच्चों के लिए है।
२. सभी भाषाओं के संस्करणों से इस प्रतियोगिता के लिए तीन विजेता चुने जायेंगे। विजेताओं को समुचित आकार की साइकिल दी जायेगी। यदि सर्वशुद्ध प्रविष्टियाँ अधिक हुई तो विजेता का चुनाव 'मेरा प्रिय नायक' के सर्वश्रेष्ठ विवरण पर किया जायेगा।
३. निर्णायकों का निर्णय अंतिम होगा।
४. इस संबंध में कोई पत्राचार नहीं किया जायेगा।
५. विजेताओं को डाक द्वारा सूचित किया जायेगा।

पुरस्कार देनेवाले हैं

मनोरंजन टाइम्स
कछुए को कुछ दावत दो !
धीरू कछुआ को आइसक्रीम का बड़ा शौक है और वह खुशी के मारे उछल रहा है। परन्तु बेचारे को भूलभुलैया पार करना नहीं आता। क्या तुम मदद कर सकते हो?
खोज निकालो
यहाँ दिये गये दोनों चित्र एक जैसे लगते हैं। लेकिन उनके बीच आठ भिन्नताएँ हैं।
शुभ खोज !

चित्र कैप्शन प्रतियोगिता

क्या तुम कुछ शब्दों में ऐसा चित्र परिचय बना सकते हो, जो एक दूसरे से संबंधित चित्रों के अनुकूल हो?

चित्र परिचय प्रतियोगिता, चन्दामामा,
प्लाट नं. ८२ (पु.न. ९२), डिफेन्स आफिसर्स कालोनी, इकाडुथांगल, चेन्नई -६०० ०९७.

जो हमारे पास इस माह की २० तारीख तक पहुँच जाए । सर्वश्रेष्ठ चित्र परिचय पर १००/-रुपये का पुरस्कार दिया जाएगा, जिसका प्रकाशन अगले अंक के बाद के अंक में किया जाएगा ।

बधाइयाँ

जुलाई अंक के पुरस्कार विजेता हैं :

विनीता, C/o. स्क्वैड्रन लीडर भागवत
लॉजिस्टिक अफसर,
एयर फोर्स स्टेशन,
ताम्बरम, चेन्नई.

विजयी प्रविष्टि

अरे! कौन खरगोश है यह, कहाँ से आया।
मेरा कोई कसूर न कहना, मौसम ने यह हाल बनाया ।।

खोज निकालो !

मनोरंजन टाइम्स (पृष्ठ ६५) के उत्तर

१. सिंह का अयाल
२. मधुमक्खी के पंख
३. खटमल का पैटर्न
४. हाथी की भौं
५. भेड़िए की पूँछ
६. फूलदान
७. फूलों की संख्या
८. इस्त्री

Printed and Published by B. Viswanatha Reddi at B.N.K. Press Pvt. Ltd., Chennai - 600 026 on behalf of Chandamama India Limited, No. 82, Defence Officers Colony, Ekkatuthangal, Chennai - 600 097. Editor : Viswam

CHANDAMAMA (Hindi) SEPTEMBER 2002 Registrar of Newspaper for India No. 1087/57
Registered No. TN/CPMG-866/2002